ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५६ अंक - १३ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र जुलाई (प्रथम) २०१४

महर्षि दयानन्द सरस्वती

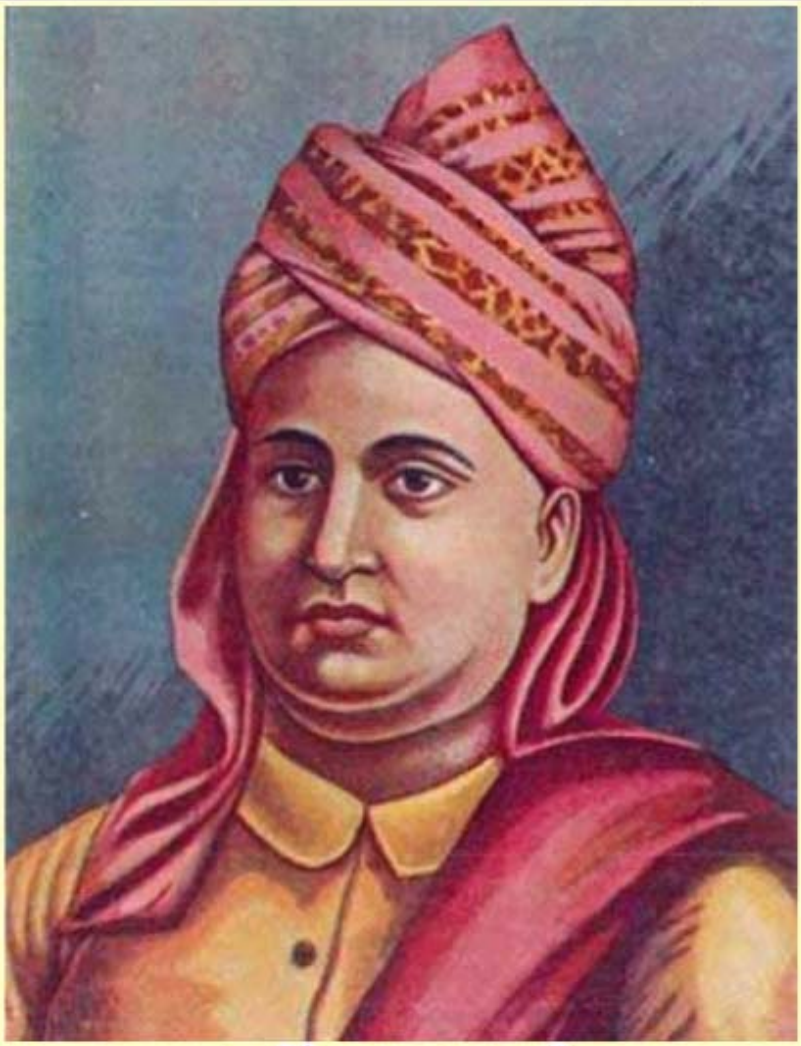

आर्यवीरांगना दल शिविर (१ से ८ जून २०१४)

ऋषि उद्यान, अजमेर

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५६ अंक : १३
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: आषाढ़ शुक्ल, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

जुलाई प्रथम २०१४

अनुक्रम

१. बलात्कार - ज्वलन्त समस्या	सम्पादकीय	०४
२. अध्यात्म-पथ में स्मृति की कितनी....	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	११
४. मसालों का शहँशाह		१९
५. अमर शहीद कुं. प्रताप	फतहसिंह मानव	२०
६. आर्यसमाज का प्रथम नियम.....	मणीन्द्र कुमार व्यास	२३
७. क्या आर्य अन्य देशों से विस्थापित....	- मोहनलाल तँवर	२९
८. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		३२
९. जिज्ञासा समाधान-६६	आचार्य सोमदेव	३५
१०. पुस्तक - समीक्षा	देवमुनि	३६
११. संस्था-समाचार		३७
१२. आर्यजगत् के समाचार		४०

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

बलात्कार – ज्वलन्त समस्या

आज हमारा देश जिस बात के लिए विश्वविख्यात हो रहा है उनमें एक बात है बलात्कार। कोई दिन ऐसा नहीं जाता जिस दिन समाचार पत्र और दूरदर्शन पर बलात्कार के वृत्तान्त न आते हों। पिछले दिनों दो बालिकाओं के साथ बलात्कार के बाद उन्हें मारकर पेड़ पर लटका दिया गया। इस घटना ने पूरे समाज को स्तब्ध करके रख दिया। आज ऐसी घटनायें कितनी हैं, इसकी कोई सीमा नहीं रह गई। इसकी प्रतिक्रिया में जो लोगों के वक्तव्य और बयान आ रहे हैं वे और भी चौंकाने वाले हैं। मुलायम सिंह जैसे नेता तो समझते हैं कि बलात्कार तो एक सामान्य दुर्घटना है, इसके लिए किसी प्रकार के कड़े दण्ड का प्रावधान करना उचित नहीं है। मुलायम सिंह कहते हैं– जवानी में लड़कों से भूल हो जाती है। क्या इसके लिए किसी को फांसी की सजा देना उचित है। मुलायम सिंह एक राजनेता है और उनकी विशेषता रही है कि वे समाज विरोधी लोगों के समर्थन से सत्ता प्राप्त करने में विश्वास करते हैं। जब वे उत्तर प्रदेश में मुख्यमन्त्री थे तो लोगों ने उन्हें उन लोगों की शिकायत की जो दूध में मिलावट करते थे तब मुलायम सिंह का उत्तर था– दूध बेचने वालों को भी अपने बच्चे पालने हैं, उन्हें भी दूध में मिलावट करने का अधिकार है। उत्तर प्रदेश में परीक्षाओं में छात्रों द्वारा नकल करने का अपराध बहुत बढ़ गया तो मुख्यमन्त्री कल्याणसिंह ने संज्ञेय अपराध घोषित कर दिया, परिणामस्वरूप बहुतों को जेल की हवा खानी पड़ी, परन्तु मुलायम सिंह ने मुख्यमन्त्री बनते ही उस कानून को समाप्त कर दिया। मुलायमसिंह समाज कण्टकों को सत्ता का सोपान समझते हैं, इस कारण उन्होंने उत्तर-प्रदेश में मुसलमानों को कुछ भी करने की छूट दे रखी है। पुलिस और सरकार में उनके विरुद्ध शिकायत होने पर कोई दण्डात्मक कार्यवाही नहीं होती, इसके विपरीत हिन्दुओं को पुलिस तंग करती है। अतः बलात्कार पर मुलायम सिंह की टिप्पणी को उनके व्यवहार के साथ जोड़कर देखा जाना चाहिए। दूसरे लोग अपनी लड़ाई का बदला महिला का अपमान करके अथवा उससे बलात्कार कर के लेते हैं। ऐसे में जिस भी पक्ष को अवसर मिलता है वे दूसरे पक्ष की महिला से दुर्व्यवहार करने में न संकोच करते हैं न उसे बुरा समझते हैं। इसके विपरीत ऐसा करने वाले व्यक्ति गर्व से समाज में इस बात का बखान करते हैं। यह कार्य किसी वर्ग, जाति या धर्म तक सीमित नहीं है, यह एक पुरुष मानसिकता बन गई है। स्वतन्त्रता के समय विभाजन के दुःखों में एक समाज द्वारा दूसरे समाज की महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार, बलात्कार, हिंसा के कुकृत्य, स्वेच्छाचारिता के साथ किये गये। मनुष्य अपनी वासना की पूर्ति के न होने पर अपने क्रोध का शिकार भी महिलाओं को बनाता है। हिंसा में मनोरंजन और पौरुष ढूंढना मनुष्य की पाशविक प्रवृत्ति का परिचायक है।

महिलाओं के साथ क्रोध और लड़ाई में भी हिंसा होती है और वासना की पूर्त्ति में भी महिला हिंसा, पीड़ा, दुर्व्यवहार और शोषण की शिकार होती है। पुरुष ऐसा करके अपने को विजयी अनुभव करता है। यह परिस्थिति किसी भी समाज में देखी जा सकती है। पिछले दिनों इराकी सैनिकों के साथ अमेरिकी सेना ने जो व्यवहार किया उसके चित्र दूरदर्शन पर संसार के लोगों ने देखे थे। हमें मूल बात समझने की आवश्यकता है स्त्री के प्रति जो मानसिकता है वह बाहर की सीमाओं से बंधी हुई नहीं है। यह एक शुद्ध पुरुष मानसिकता का उदाहरण है। पुरुष के रूप में वह हिन्दू, मुसलमान, ईसाई कुछ भी हो सकता है। इस मानसिकता को कोई जाति, धर्म, समुदाय उचित ठहरा लेता है और उसे करने में संकोच नहीं करता, जहाँ पुरुष इस मानसिकता को मान्यता नहीं मिली है वहाँ अपराध तो निरन्तर हो रहे हैं लेकिन उनकी निन्दा होती है। इस मानसिकता को पहले लोगों ने स्त्री पर नियन्त्रण करके सुलझाने का यत्न किया। स्त्री की स्वतन्त्रता को समाप्त कर उसे पुरुष के आधीन कर दिया और उसकी रक्षा का उत्तरदायित्व पुरुष को सौंप दिया। इस व्यवस्था में रक्षा का काम स्त्री मात्र के लिए नहीं होकर अपने परिवार, अपने घर, अपने समाज, अपनी जाति की स्त्रियों तक सीमित हो गया है, इसका परिणाम यह हुआ कि जो भावना अपने समाज की स्त्रियों के लिए स्वीकार की गई, दूसरे समाज के लिए इन भावनाओं की आवश्यकता नहीं समझी गई।

एक बार एक जाति विशेष के उत्सव में आमन्त्रित होकर गया तब वहाँ के लोगों के भाषण सुने, जिनमें बड़े आग्रह से कहा जा रहा था कि हमारी जाति का ऐसा प्रभाव होना चाहिए कि हमारे समाज के व्यक्ति से मिलने पर

जिलाधीश खड़ा हो जाय। सड़क पर चलती हुई हमारी जाति की लड़की पर किसी गुण्डे को आँख उठाकर देखने का साहस नहीं होना चाहिए। जब उस सभा में मुझे कुछ कहने का अवसर मिला तो मैंने बताया- मनुष्य आधा सदाचारी और आधा दुराचारी नहीं होता, वह कम या अधिक सदाचारी-दुराचारी हो सकता है परन्तु दुराचारी व्यक्ति किसी को छोड़ दे, किसी के साथ दुष्कर्म करे ऐसा सम्भव नहीं है। सारे समाज की लड़कियाँ जब तक सम्मान और सुरक्षा की अधिकारिणी नहीं बनती तब तक यह समझना कि इस समाज में हमारी बहन-बेटियाँ सुरक्षित हैं, यह एकांगी और मूर्खतापूर्ण है। समाज में आप से कोई डरता है तो आपको भी किसी से डरना पड़ता है अत: समाज को समग्र रूप से सुधारने की आवश्यकता है। इस पुरुष मानसिकता को महिला को स्वतन्त्रता न देकर भी समाप्त नहीं किया जा सकता। इस सुरक्षा के घेरे में भी सम्भव है कि महिला बाहर के पुरुष के दुर्व्यवहार से बच जाये परन्तु घर के लोगों के दुर्व्यवहार से उसे कौन बचायेगा। स्त्रियों से दुर्व्यवहार के विषय में जो भी अध्ययन किये गये हैं, उनमें चौंकाने वाले तथ्य हैं कि महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार, बलात्कार, शोषण, यौन-शोषण जैसी जितनी घटनायें परिवार के निकट सम्बन्धियों द्वारा की जाती हैं, उतनी बाहर के लोग नहीं करते। ऐसी स्थिति में अपने लोगों द्वारा महिला की सुरक्षा के नाम पर उसकी स्वतन्त्रता छीनने से उसकी सुरक्षा नहीं होती।

महिला के साथ किये जाने वाले अन्याय के निराकरण में एक बड़ी बाधा यह है कि यदि महिला अपने साथ हुए अन्याय, अत्याचार को सार्वजनिक करती है तो यह उसके लिए घातक हो जाता है। स्त्री के साथ हुए अन्याय को छिपा लेना या चुपचाप सह लेना हमारे समाज में महिला के चरित्र का भूषण समझा जाता है। उस अन्याय का विरोध करना, प्रतिकार करना, उसकी निर्लज्जता या बेशर्मी बताकर महिला को ही दोषी मानकर तिरस्कृत किया जाता है। इसलिए अधिकांश महिलाएँ अपने साथ हुए अपराधों को बताने में संकोच और भय का अनुभव करती हैं। यह ठीक है कि वह बाहरी व्यक्ति के द्वारा किये अन्याय को सम्मान के भय से नहीं कहती परन्तु घर में घर के लोगों द्वारा किये गये शोषण को वह किसके सामने कहे और कहकर उसी घर में वह कैसे सुरक्षा और सम्मान सहित रह सकती है, यह हमारी सामाजिक परम्पराओं की विडम्बना है। महिला अपराधों की एक विचित्रता और है कि पुरुष महिला के प्रति अपराधी होकर भी समाज में सम्मानित दृष्टि से देखा जाता है, पुरुष इसे अपने पौरुष की पहचान समझता है, इसके विपरीत स्त्री प्रताड़ित की जाकर भी अपराधी समझी जाती है और उस पर कलंक का ठप्पा समाज लगा देता है।

समाज में लोकोक्ति है, 'जादू वह जो सिर चढ़कर बोले' यही परिस्थिति आज उत्तर प्रदेश सरकार की है, मुख्यमन्त्री कहते हैं- आज समाज में नारी के प्रति बढ़ते अपराधों का कारण अश्लील विज्ञापन, चलचित्र, फैशन, इन्टरनेट आदि आधुनिक उपकरण और विचारों का परिणाम है। जब समाज सुधारक लोग इन बातों की आलोचना करते हैं तब आप उन्हें रूढिवादी, पुरातनपन्थी, दकियानूसी आदि शब्दों से सम्बोधित करते हैं। आज आपको यही अपराध का मूल लगने लगते हैं। बात तो वहीं आकर टिकती है, वर्तमान शिक्षा प्रणाली, फैशन, विज्ञापन, सबकुछ सरकार ही तो दे रही है। अपराधी हर परिस्थिति में सरकार ही है। आज अनैतिकता के दुष्परिणाम हमें नैतिकता का स्मरण करा रहे हैं। कर्ण को भी मरते समय धर्म की याद आई थी।

समाज की विडम्बना यह है कि हमने लड़की को अपने सम्मान और अपने धन से जोड़ लिया है। हमने उसे जीवित प्राणी मनुष्य न मानकर विनिमय की वस्तु बना दिया है। लड़की हमारी इच्छानुसार करती है, उसमें हमारा सम्मान है। अपनी इच्छा से करती है, हमारा अपमान है। लड़की घर जन्म लेती है, हमारी दरिद्रता का प्रतीक बनती है। लड़का जन्म लेता है, सम्पन्नता की आशा लाता है। इन विचारों के साथ हम नारी के साथ कैसे न्याय कर सकते हैं?

इन सन्दर्भों में हम विचार करके देखें तो इसका उपाय खोजा जा सकता है। हमने पुरानी मानसिकता में स्त्री की सामाजिक स्थिति का अवलोकन किया। समाज के सुधार के लिए हमारी आधुनिक सोच का भी विचार करना अनिवार्य है। आज आधुनिकता के नाम पर जिन पुराने विचारों को हटाने की बात करते हैं वहीं नये विचारों से स्त्रियों के प्रति होने वाले अपराध समाप्त होने की बात सोचना पुराने उपायों से भी बड़ी भूल होगी। हम आज की स्त्री को उसके अधिकार के रूप में उसे स्वतन्त्रता देने के पक्षपाती हैं परन्तु स्वतन्त्रता की सीमा का हमको पता नहीं है। हम भूल जाते हैं, हमारे घर, परिवार, गाँव, देश की सीमा है जिसके अन्दर हम स्वतन्त्र हैं परन्तु उससे बाहर

हमारी स्वतन्त्रता नहीं चल सकती, उससे आगे या तो हम नहीं रहेंगे या हमारी स्वतन्त्रता नहीं रहेगी। आज की स्त्री का मानना है कि उसका शरीर उसकी निजी सम्पत्ति है, उसका उपयोग करना, उसका प्रदर्शन करना उसका अधिकार है। उसकी इच्छा है वह चाहे जैसे इसका प्रयोग करे। यह बात ठीक लगती है परन्तु हम भूल जाते हैं कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है, वह समाज को प्रभावित करता है और समाज से प्रभावित होता है। कोई महिला फैशन में कपड़े कम पहनना चाहती है यह उसका अधिकार है परन्तु वह ऐसा क्यों करना चाहती है? क्या इसका उद्देश्य दूसरों की दृष्टि में अच्छा लगना, सुन्दर दिखना और उसको आकर्षित करना नहीं है, यदि कोई ऐसा करने से आकर्षित होता है तो उसके आकर्षित होने की सीमा कौन निश्चित करेगा? तब क्या पुरुष उस सौन्दर्य और आकर्षण का शिकार नहीं होगा, उस परिस्थिति में उचित-अनुचित की सीमा कैसे निर्धारित होगी? कौन उसका निर्णायक होगा? स्त्री स्वतन्त्रता के विषय में एक विचित्र सोच हमारे समाज में देखने में आती है, हमारे घर में हमारी बेटियाँ जो पहनती हैं, जैसे रहती हैं, हम अपने घर की बहुओं को वैसा करने, पहनने का अधिकार नहीं देना चाहते। बेटी के लिए जो सामान्य बात है वह बहू के लिए बेशर्मी समझी जाती है। स्त्री स्वतन्त्रता का एक नया संकट है शारीरिक सम्बन्धों की स्वतन्त्रता। यह आज आधुनिक होने का प्रमाण पत्र समझा जाता है। यहाँ पर स्त्री स्वतन्त्रता को आप कैसे बचायेंगे जब आप अपने अधिकार किसी को सौंप देते हैं तब आप उसकी आधीनता स्वीकार कर लेते हैं। तब यह सोचना कि आप अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा कर सकेंगे, यह दिवा स्वप्न है। बुद्धि और समझ के बिना किये स्त्री-पुरुष सम्बन्ध मनुष्यों को दु:ख के अतिरिक्त कुछ नहीं दे सकते। जैसे आसानी से ये सम्बन्ध बनते हैं उसी आसानी से ये सम्बन्ध समाप्त भी हो जाते हैं। इनमें एक दूसरे की सम्पत्ति को जो चतुर होता है वह हड़प लेता है तथा दूसरा संकट सन्तान का आता है वह किसके पास रहे, किसकी मानी जाये। इसीलिए सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय दिया है बिना विवाह के साथ रहने पर जो सन्तान होगी वह उसी प्रकार समझी जायेगी जैसे वे विवाहित स्त्री-पुरुष की समझी जाती। आधुनिकता का तीसरा संकट है कि पुरुषों को प्रभावित करने के लिए फिल्म, दूरदर्शन, विज्ञापन, व्यापार में स्त्री का भरपूर उपयोग किया जाता है तो उसका परिणाम क्यों नहीं होना चाहिए? **आप शराब पीना चाहते हैं परन्तु नशे के अपराधों से बचना चाहते हैं ऐसा नहीं हो सकता।** मनु महाराज ने संसार में तीन अपराध ऐसे गिने हैं जिनसे बचने के लिए उनसे दूर रहना ही उसका उपाय है। वे हैं- परस्त्री गमन, दूसरा नशा, तीसरा लोभ जिसका प्रतीक जुआ है। आज हम तीनों को करने की छूट भी चाहते हैं और इनसे होने वाले अपराधों से बचना भी चाहते हैं। यह कैसे सम्भव है?

समाज में मनुष्य अपराध से तीन प्रकार से बचता है। पहला जो व्यक्ति विवेकशील समझदार होता है। जिसके पास उचित-अनुचित को जानने-पहचानने की योग्यता होती है, वह अच्छे कार्यों को करता है और बुरे कार्यों से बचता है। ऐसे व्यक्तियों की संख्या समाज में बहुत थोड़ी होती है या कहना उचित होगा कि ऐसे व्यक्ति नगण्य होते हैं। दूसरे लोग जो समाज में बड़ी संख्या में होते हैं जो कानून से डरते हैं, समाज में जिनको अपनी प्रतिष्ठा जाने का भय सताता है, समाज के नब्बे से निन्यानवे प्रतिशत लोग ऐसे होते हैं जो अपने सम्मान के जाने के भय से बुरे कार्यों से बचते हैं। उन्हें समाज में लज्जित न होना पड़े इसलिए अपनी इच्छाओं को नियन्त्रित करके अनुशासन का पालन करते हैं। समाज में तीसरे प्रकार के लोग वे होते हैं जो दण्ड या जेल, फांसी के भय से नियम कानून का पालन करते हैं। उनको यदि ऐसा प्रतीत हो कि कानून से बचा जा सकता है चाहे इसके लिए रिश्वत देनी पड़े, सिफारिश करनी पड़े, फिर ऐसे लोग अपराध करने में अग्रसर होने लगते हैं। समाज में ऐसे लोगों के कारण अपराध करने पर मिलने वाले दण्ड का भय कम होने लगता है और अपराध व अपराधी समाज में बढ़ने लगते हैं, जिनके कारण समाज की मर्यादाएँ टूटने लगती हैं। यही स्थिति आज हमारे समाज में उत्पन्न हो गई है। महिलाओं के प्रति आधुनिकता के पक्षधर भी उतने ही अपराधी हैं जितने पुरातनपन्थी। समाज में स्त्री-पुरुषों के बीच व्यवहार का सन्तुलन, समझ और कठोर दण्ड दोनों के समन्वय के बिना सम्भव नहीं है। इसलिए समाज को स्वच्छ, सन्तुलित रखने के लिए समाज को चरित्रवान् बनाना होगा। चरित्र स्त्री और पुरुष दोनों से सम्बन्ध रखता है। मनु के शब्दों में चरित्र ही इस देश की सम्पत्ति है, जो संसार में इसको उच्चता प्रदान करती है। अत: मनु कहते हैं-

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा:।।

- धर्मवीर:

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण.....

अध्यात्म-पथ में स्मृति की कितनी उपयोगिता है?

- स्वामी विष्वङ्

मनुष्य के जीवन में स्मृति बहुत ही महत्त्व रखती है। मनुष्य स्मृति के कारण समस्त लौकिक एवं आध्यात्मिक कार्यों को कुशलता पूर्वक करने में समर्थ होता है। संसार में कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं है, जिसे स्मरण नहीं रहता हो। हाँ, कोई-कोई ऐसा भी मनुष्य होता है, जो 'कोमा' में रहता है। जिसको स्मरण क्या, उसे तो किसी भी प्रकार की अनुभूति भी नहीं होती है। यह बात 'कोमा' में जाने पर सम्भव है, परन्तु 'कोमा' में जाने से पहले वह अन्यों के समान ही रहा है। अब 'कोमा' में चला गया, इस कारण अनुभूति से शून्य हो गया। इसलिए संसार में बिना स्मरण किये कोई भी जीवन-यापन नहीं कर सकता है। स्मृति मनुष्य मात्र को जोड़ती है। सब को संगठित करती है। सब को प्रसन्नता व शान्ति प्रदान करती है। मनुष्य का ऐसा कोई दिन या रात्री खाली नहीं जाती है, जिसमें मनुष्य स्मृति को उत्पन्न नहीं कर पाता हो। मनुष्य के जीवन में स्मृति की व्यापकता इतनी अधिक है कि इसकी सीमा का बया नहीं कर सकते। मनुष्य की कभी ऐसी स्थिति भी आती है, जिसमें मनुष्य को पिछले की स्मृति नहीं आती है। वर्तमान को तो जान रहा है परन्तु भूतकाल की स्मृति सर्वथा नहीं आ रही होती। जिससे मनुष्य स्वयं सर्वाधिक दु:खी रहता है और उनके साथ जुड़े हुए लोग भी बहुत अधिक दु:खी रहते हैं। इसलिए स्मृति मनुष्य के जीवन में विशेष महत्त्व रखती है।

सर्वप्रथम स्मृति शब्द को ले कर विचार करते हैं कि स्मृति को स्मृति क्यों कहा जाता है? इसका समाधान योगदर्शन के प्रणेता महर्षि पतञ्जलि ने सूत्र के रूप में स्पष्ट किया है कि '**अनुभूतविषयासंप्रमोष: स्मृति:।**' (योगदर्शन १.११) अर्थात् पहले अनुभव किये हुए विषय चाहे जड़ पदार्थ (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श व शब्द) हों या चेतन पदार्थ (मनुष्य, पशु, पक्षी आदि) हों, इन सब को न भूलना- याद रखना- स्मरण रखना ही स्मृति कहलाती है। मनुष्य जो भी अनुभव करता है, उसे न भुलाना, याद रखना, इसे स्मृति कहा गया है। स्मृति कैसे बनती है, इसकी क्या प्रक्रिया होती है, किसकी स्मृति होती है अर्थात् वस्तु की स्मृति होती है या वस्तु का अनुभव (ज्ञान) मात्र की स्मृति होती है? इस सम्बन्ध में योगदर्शन के भाष्यकार महर्षि वेद व्यास कहते हैं कि '**किं प्रत्ययस्य चित्तं स्मरति आहोस्विद्विषयस्येति।**' अर्थात् मनुष्य जो स्मृति उत्पन्न करता है, तो वह केवल ज्ञान मात्र का स्मरण करता है अथवा केवल वस्तु मात्र का स्मरण करता है। इस प्रकार महर्षि वेद व्यास ने स्वयं प्रश्न उठा कर स्वयं ही उत्तर देते हैं कि मनुष्य जो भी स्मृति उत्पन्न करता है, उस स्मृति की यह प्रक्रिया होती है कि मनुष्य जिस किसी भी पदार्थ का अनुभव (चाहे प्रत्यक्ष के, चाहे अनुमान के, चाहे शब्द प्रमाण के द्वारा) करता है। वह अनुभव मन में अंकित होता है अर्थात् वह अनुभव मन में छपता है। जिस प्रकार से रबर स्टैम्प से कागज पर छपते हैं उसी प्रकार प्रत्येक अनुभूति मन पर छपती रहती है। ऐसा कोई अनुभव नहीं है, जो मन पर अंकित नहीं होता हो। मन पर जो अंकण होता है, उसी अंकण को दार्शनिक भाषा में संस्कार कहते हैं। मनुष्य के जितनी भी अनुभूतियाँ (जानकारियाँ) बनती हैं, उन सब के संस्कार पड़ते हैं। जब कभी संस्कारों को उभारता है, तो संस्कारों के अनुरूप स्मृतियों को उत्पन्न कर लेता है। यदि अनुभव (ज्ञान) वस्तु और वस्तु से सम्बन्धित जानकारी से युक्त है अर्थात् वस्तु सम्बन्धि जानकारी के साथ वस्तु को अनुभव करता है, तो वैसा ही संस्कार बनता है और जैसा संस्कार बनता है, वैसा ही (संस्कार के अनुरूपी ही) स्मृति उत्पन्न होती है। इसलिए महर्षि वेदव्यास लिखते हैं कि - '**ग्राह्योपरक्त: प्रत्ययो ग्राह्यग्रहणोभयाकारनिर्भास:।**' अर्थात् कोई भी ज्ञान स्वतन्त्र (वस्तु से रहित) नहीं रह सकता। ज्ञान एक गुण-धर्म-विशेषता है। इसलिए कोई भी गुण स्वतन्त्र रूप से द्रव्य से रहित नहीं रह सकता। प्रत्येक गुण द्रव्याश्रित रहता है अर्थात् द्रव्य में रहता है। द्रव्य से पृथक् नहीं रह सकता। इस कारण महर्षि वेद व्यास कहते हैं कि 'प्रत्यय:' अर्थात् ज्ञान गुण 'ग्राह्योपरक्त:' अर्थात् जानने योग्य द्रव्य को ग्राह्य कहा है, इसलिए ज्ञान गुण सदा द्रव्य से उपरक्त=जुड़ा रहता है- अलग नहीं रहता। इस कारण जब कभी स्मरण आता है, तो ग्राह्य=द्रव्य और ग्रहण=ज्ञान, इन दोनों से युक्त स्मरण आता है। न केवल द्रव्य का स्मरण और न केवल ज्ञान का स्मरण होता है। बल्कि द्रव्य व ज्ञान दोनों का एक साथ स्मरण आता है।

महर्षि वेद व्यास कहते हैं कि **'ग्राह्यग्रहणोभयात्मिकां स्मृतिं जनयति।'** अर्थात् जब वस्तु और वस्तु की जानकारी दोनों के संस्कार पड़ते हैं, तो स्मृति भी द्रव्य रूप ग्राह्य और ज्ञान गुण रूप ग्रहण इन दोनों की स्मृति आती है। इसलिए स्मृति को केवल वस्तु की स्मृति नहीं कह सकते और न ही केवल ज्ञान गुण की स्मृति कह सकते हैं। हाँ, वस्तु और ज्ञान गुण दोनों की स्मृति हो रही है, ऐसा अवश्य कह सकते हैं। यह स्मृति वहाँ-वहाँ लागू होती है जहाँ-जहाँ वस्तुओं का प्रत्यक्ष हुआ हो और जहाँ वस्तु के बिना मुख्य रूप से ज्ञान मात्र का अनुभव किया हो वहाँ मुख्य रूप से ज्ञान की ही स्मृति आयेगी, क्योंकि वहाँ पर द्रव्य गौण और ज्ञान मुख्य है। इसी प्रकार जहाँ-जहाँ वस्तु की जानकारी गौण हो और मुख्य रूप से द्रव्य की अनुभूति हुई है, तो वहाँ-वहाँ मुख्य रूप से द्रव्य की ही स्मृति आयेगी, ज्ञान की नहीं। इस स्मृति को प्रकारान्तर (विकल्प के रूप) में लेना चाहिए। सामान्य नियम में तो उस (द्रव्य की और द्रव्य से सम्बन्धित ज्ञान गुण की) स्मृति को लेना उपयुक्त है और यह ही सिद्धान्त है।

महर्षि वेद व्यास स्मृति के सम्बन्ध में कहते हैं कि- **'सा च द्वयी भावितस्मर्तव्या चाभावितस्मर्तव्या च।'** अर्थात् स्मृति दो प्रकार की होती है। एक प्रकार का नाम 'भावितस्मर्तव्या' है अर्थात् भावित=कल्पित है। कल्पित स्मृति, जिसे काल्पनिक स्मृति भी कहते हैं। कल्पना के द्वारा बनने वाली स्मृति है, अयथार्थ है-मिथ्या है। दूसरी स्मृति का नाम 'अभावितस्मर्तव्या' है अर्थात् जो काल्पनिक नहीं है, यथार्थ है, जिसे उचित कहा जाता है। ये दोनों स्मृतियाँ प्रत्येक मनुष्य को होती हैं। महर्षि कहते हैं कि **'स्वप्ने भावितस्मर्तव्या जाग्रत्समये त्वभावितस्मतव्येति।'** अर्थात् स्वप्न काल में काल्पनिक स्मृति होती है और जागरित=व्यवहार काल में यथार्थ स्मृति होती है। स्वप्न काल का अभिप्राय है जब मनुष्य रात्री में नींद के लिए सोता है, तो निद्रा पूर्ण रूप से न आ कर आधी नींद आती है। ऐसी स्थिति को स्वप्न कहते हैं। क्योंकि वह स्थिति न तो पूर्ण निद्रा की है और न ही जागरित=व्यवहार काल की है। इसलिए उसे स्वप्नकाल कहा जाता है। स्वप्न में जो भी स्मृतियाँ उभरती हैं, वे सब अयथार्थ=मिथ्या होती हैं।

स्वप्न को समझने के लिए एक उदाहरण को लीजिए कि एक व्यक्ति को स्वप्न आ रहा है। वह स्वप्न में स्वयं को आकाश में उड़ता हुआ देखता है, परन्तु कभी पहले ऐसा उड़ा नहीं है, फिर भी ऐसी स्मृति हो रही है। यहाँ पर यह समझना चाहिए कि यद्यपि स्मृति पूर्व (पहले) अनुभव किये हुए विषयों की होती है और यहाँ पर भी स्वप्न में पूर्व अनुभव किए की ही स्मृति हो रही है, परन्तु उलट-पुलट हो कर हो रही है। जैसे जागरित=व्यवहार काल में मन पर नियन्त्रण होता है वैसे स्वप्न काल में नहीं होता है। इसी कारण पक्षी के उड़ने के संस्कार को स्वयं के साथ जोड़कर उड़ता हुआ देखता है। यहाँ पर यही अयथार्थ=मिथ्या स्मृति है। उदाहरण के लिए किसी बालक के चाचा आदि ने हाथी के चित्र को खण्ड-खण्ड कर फैंक दिया हो और वह छोटा बालक उसे जोड़कर पुनः हाथी बना लेता है। परन्तु वह बालक पूँछ को सूँड के स्थान पर और सूँड़ को पूँछ के स्थान पर जोड़ लेता है। यहाँ पर बालक को पूरी जानकारी नहीं होने के कारण उल्टा जोड़ रहा है अर्थात् यहाँ पर अज्ञान कारण बन रहा है। उसी प्रकार स्वप्न काल में मनुष्य में मन पर अनियन्त्रण कारण बन रहा है।

स्वप्न काल में जो भी स्मृतियाँ आती हैं, वे सब पहले अनुभव किए हुए की ही होती हैं। परन्तु इतना अवश्य समझ लेना चाहिए कि मन पर नियन्त्रण न होने के कारण अपने संस्कारों को उलट-पुलट करके गलत जोड़ लेते हैं। इस कारण ऐसा लगता है कि हमने कभी ऐसा नहीं किया। ऐसा भी होता है कि इस जन्म में ऐसी कोई घटना न हुई हो और स्वप्न में उस प्रकार की घटना की स्मृति हो रही हो, उसके पीछे बहुत सारे कारण होते हैं। जैसे कि पढ़कर, सुनकर या कल्पना करके वैसे-वैसे संस्कार बना लिए हों अथवा जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों के कारण किसी जन्म के संस्कार उद्‌बुद्ध होने पर भी ऐसी स्मृतियाँ होती हैं। इसलिए स्मृति मात्र पूर्व अनुभूत की ही होती है। यह स्थिर सिद्धान्त है। जागरित=व्यवहार काल में अभावितस्मर्तव्या=यथार्थ स्मृतियाँ होती हैं। जागरित काल में मनुष्य अपने आपको (अपने मन को) अपेक्षाकृत नियन्त्रण में रखता है। इस कारण स्मृतियाँ यथार्थ आती हैं। स्वप्न काल की और जागरित काल की स्मृतियाँ अपवाद रूप में भी होती रहती हैं अर्थात् स्वप्न काल में कभी-कभी विरल रूप में यथार्थ स्मृति भी हो सकती है और जागरित काल में कभी-कभी मन पर नियन्त्रण न होने से अयथार्थ स्मृति भी हो सकती है।

स्मृतियों के प्रकारों को बताते हुए महर्षि वेद व्यास कहते हैं कि-

सर्वाश्चैताः स्मृतयः प्रमाणविपर्यय-
विकल्पनिद्रास्मृतीनामनुभवात् प्रभवन्ति।

अर्थात् मनुष्य को जितनी भी स्मृतियाँ उत्पन्न होती हैं, वे प्रत्यक्ष, अनुमान व शब्द प्रमाण से, मिथ्याज्ञान रूप विपर्यय से, विकल्प से, निद्रावृत्ति से स्मृतियाँ होती हैं और स्मृति से भी स्मृति उत्पन्न होती है। इस प्रकार पाञ्चों वृत्तियों से स्मृतियाँ उत्पन्न होती है। मनुष्य के जीवन में स्मृति की उपयोगिता कितनी मात्रा में है और कहाँ-कहाँ स्मृति लाभकारी बनती है और कहाँ-कहाँ स्मृति हानिकारक बनती है? यद्यपि स्मृति का होना अपने आप में बहुत महत्त्व रखती है, परन्तु स्मृति का उपयोग कहाँ पर करने से अधिक लाभकारी बनती है और कहाँ पर उपयोग करने से हानिकारक बनती है। यह विशेष रूप से अध्यात्म पथिक को विचार करना चाहिए।

जब कभी मनुष्य जिस किसी को भी अनुभव करता है। वह अनुभव दो प्रकार का हो सकता है। एक अनुभव उचित-न्याय-धर्म या पुण्य के रूप में और दूसरा अनुभव अनुचित-अन्याय-अधर्म या पाप के रूप में होता है। जब अनुभव दो प्रकार का होता है। तब स्मृति भी दो प्रकार की होगी। पहली बात तो यह है कि अध्यात्म पथिक को चाहिए वह अनुभव करते समय विशेष ध्यान रखें कि अनुचित अनुभव न करें। फिर भी किसी कारण (अज्ञान या शीघ्रता आदि) से अनुचित अनुभव कर लेता है, तो उसका प्रायश्चित करें, दण्ड लेवें और भविष्य में न करने का संकल्प लेवें। अब अनुभव तो हो चुका है, उसका संस्कार अवश्य अंकित हो चुका है और उस संस्कार से कभी न कभी स्मृति अवश्य हो सकती है। इसलिए अध्यात्म पथिक को चाहिए उस संस्कार को मिटाने का पूर्ण पुरुषार्थ करना चाहिए। जिससे वह संस्कार मिट सके और अनुचित स्मृति न आ सके।

उचित स्मृतियों को उत्पन्न करने के लिए अध्यात्म पथिक को विशेष पुरुषार्थ करना चाहिए। क्योंकि उचित स्मृति अध्यात्म मार्ग को शीघ्रता से प्रशस्त करती है। क्योंकि महर्षि पतञ्जलि और महर्षि वेदव्यास ने स्मृति उत्पन्न करने को पुण्य कर्मों में स्वीकार किया है। कर्मों की चर्चा में चार प्रकार के कर्म (निष्काम, पुण्य, मिश्रित व पाप) बताये गये हैं। जिन को योग में अशुक्ल-अकृष्ण (निष्काम) कर्म, शुक्ल (पुण्य) कर्म, शुक्लकृष्ण (मिश्रित) कर्म और कृष्ण (पाप) कर्म से कथन किया गया है। महर्षि वेदव्यास कर्मों की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि शुक्ल (पुण्य) कर्म केवल मन से किये जाते हैं। वे यह भी लिखते हैं कि शारीरिक व वाचनिक कर्मों की अपेक्षा मानसिक कर्म अधिक बलवान होते हैं। मानसिक कर्मों को गिनाते हुए स्मृति को भी पुण्य कर्म में स्वीकार करते हैं। यद्यपि मन से होने वाले कर्म दो प्रकार से होते हैं। परन्तु यहाँ पर मानसिक पापों को न लेकर मानसिक पुण्यों को ही लेना चाहिए।

अध्यात्म पथिक ने योगाभ्यास करते हुए जो-जो अनुभव (प्रत्यक्ष के द्वारा या अनुमान के द्वारा अथवा शब्द प्रमाण के द्वारा) किया है। उन सब को स्मरण रखता है, तो जब-जब उन की आवश्यकता पड़ेगी, तब-तब उनकी स्मृति ले आता है। उनकी जितनी बार स्मृति लायेगा उतने पुण्य कर्म बनते जायेंगे। अध्यात्म पथिक के जीवन में जब कभी हिंसा के भाव उभरने लगे, तो उस अहिंसा को स्मरण करना चाहिए जिसे वह प्रत्यक्ष रूप में किसी की रक्षा करके अहिंसा का अनुभव किया है। जिन-जिन के साथ व्यवहार करते हुए वैर-द्वेष, ईर्ष्या आदि भावों को त्याग करके निर्वैर होकर अहिंसा का अनुभव किया है। इस प्रकार अनेकों उदाहरण व्यक्ति के जीवन में हुए हैं, जिनमें उसने अहिंसा का अनुभव किया है। उस अनुभव की स्मृति ला कर वर्तमान में भी हिंसा से बच सकते हैं। इस प्रकार पूर्व अनुभूत अहिंसा की स्मृति फिर से ले आना ही पुण्य कर्म है। ऐसे-ऐसे पुण्य कर्मों को अनगिनत कर सकते हैं। जिस प्रकार अहिंसा की स्मृति लायी जाती है उसी प्रकार सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान की भी स्मृतियाँ लाकर अनेकों पुण्य कर्म कर सकते हैं। मनुष्य अपने जीवन काल में बहुत सारे पुण्य करता रहता है। उसने जो भी पुण्य कर्म किये हैं, उनकी स्मृति उठा कर फिर से पुण्य कर्म करने का सुअवसर प्राप्त कर सकता है।

अध्यात्म मार्ग में चलने वाले पथिक अनेक उत्तम उपायों को अपना कर अनेक बार अनेक उपलब्धियों को प्राप्त कर चुके होते हैं। उन उपायों व उपलब्धियों को स्मरण करके पुनः पुण्य के भागी बन सकते हैं। मनुष्य खाली नहीं रह सकता है, उसे कुछ न कुछ कर्म तो अवश्य करना ही पड़ता है। यदि वह पूर्व अनुभव किये हुए को स्मरण करने लगता है, तो वह नये करने वाले पाप कर्मों से बच सकता है। 'खाली दिमाग शैतान का घर' कहा जाता है। इसलिए अध्यात्म पथिक को खाली नहीं रहना चाहिए। जब कभी विशेष कार्य न हो तब खाली दिमाग न रह कर पहले अनुभव किए हुए को स्मृति में ला-लाकर अपने दिमाग को व्यस्त करते जाना चाहिए।

जिससे किसी भी प्रकार के पाप कर्म न होने पाये।

व्यवहार काल में स्मृति अत्यन्त उपयोगी बनती है, परन्तु प्रातः और सायं जब ध्यान करना हो- उपासना करना हो या भक्ति करनी हो तब स्मृति को नहीं उठानी चाहिए। यदि उचित-न्याय-सत्य युक्त स्मृति मान कर ध्यान काल में उठाते हैं, तो ध्यान, ध्यान के रूप में कभी नहीं हो पायेगा। इसलिए ध्यान काल में स्मृति को सर्वथा रोक देना चाहिए। यदि उचित स्मृति को पुण्य कर्म माना जाता है और वह मुक्ति में सहायक है, तो उसे क्यों रोकना चाहिए? इसका समाधान यह है कि व्यवहार काल में उचित स्मृति सदा मुक्ति में सहायक रहेगा, परन्तु ध्यान काल में बाधक बनेगा। यदि ध्यान काल में स्मृति को उठाने में लगे रहेंगे, तो मन ध्यान से हट जायेगा। जिससे ध्यान नहीं हो पायेगा। ध्यान करने के लिए ही सभी वृत्तियों को रोका जा रहा है, फिर स्मृति वृत्ति को कैसे उठाया जा सकता है। इसलिए ध्यान में स्मृति को उठाना दुःखदायी है। इस कारण स्मृति जहाँ व्यवहार काल में अत्यन्त लाभकारी होती हुई भी ध्यान काल में अत्यन्त हानिकारक भी बनती है।

इसलिए महर्षि वेदव्यास कहते हैं- **'एताः सर्वाः वृत्तयो निरोद्धव्याः।'** अर्थात् प्रमाण, विपर्यय आदि वृत्तियों के साथ-साथ स्मृति वृत्ति को भी रोक देना चाहिए। जिससे मन एकाग्र हो कर सम्प्रज्ञात समाधि को प्राप्त कर सके। यदि मन को निरुद्ध अवस्था में पहुँचाते हैं, तो असम्प्रज्ञात रूप समाधि को पाकर पूर्ण आनन्द को प्राप्त कर लेते हैं। यह ही मनुष्य का मुख्य प्रयोजन है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के उपनिषद् प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

जो नित्य पदार्थों में नित्य और स्थिरों में भी स्थिर परमेश्वर है, उस समस्त जगत् के उत्पन्न करने वाले परमेश्वर की प्राप्ति और योगाभ्यास के अनुष्ठान से ही ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता है, अन्यथा नहीं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२५

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

मरहूम-आँजहानी:- महात्मा गाँधी ने अपनी आत्म-कथा में उस युग के कई राजनेताओं की चर्चा की है। इनमें से कई पुस्तक के लिखने तक दिवंगत हो चुके थे। इस पुस्तक का उर्दू अनुवाद किन्हीं डॉ. आब्दि हुसैन ने किया है। इसे गाँधी स्मारक निधि ने प्रकाशित किया है। मैं यदा-कदा इसके एक प्रसंग की अपने व्याख्यानों व लेखों में चर्चा करता रहता हूँ। कहीं उर्दू साहित्य के एक अच्छे जानकार ने मुझे (मेरा व्याख्यान सुनकर) यह बताया डॉ. आब्दि हुसैन एक पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन के भाई थे। मैं इस उर्दू संस्करण की चर्चा करते हुए यह भी कहता व लिखता रहा। श्रीयुत् भावेश मेरजा जी ने मेरी भूल का सुधार करवा दिया। डॉ. आब्दि हुसैन जामिया मिलिया में ही पढ़ाते थे सो डॉ. जाकिर हुसैन के मित्र व सहकारी थे, भाई नहीं थे। तथ्य की ठीक जानकारी देने के लिए मैंने प्रिय श्री भावेश जी का आभार प्रकट किया।

वैसे इस पुस्तक के समर्पण का पृष्ठ कभी मेरे सामने ही न आया। समर्पण के शब्दों में ही डॉ. जाकिर हुसैन को मित्र ही बताया गया है।

इस अनुवाद की एक विशेषता अत्यन्त शिक्षाप्रद है। श्री अनुवादक महोदय ने पुस्तक में वर्णित प्रत्येक दिवंगत मुसलमान के लिये 'मरहूम' शब्द का प्रयोग किया है। इस अरबी शब्द का अर्थ 'रहमत किया गया' अर्थात् जिस पर अल्लाह मियाँ दया करेगा- जो बहिश्त में स्थान पायेगा। जो नेता मुसलमान नहीं थे (पारसी, सिख, हिन्दू आदि) उन दिवंगत नेताओं के लिए स्थान-स्थान पर 'आँजहानी' शब्द का प्रयोग किया गया। भूलचूक से भी किसी को मरहूम नहीं लिखा गया। यह पढ़कर मैं चौंक गया। 'मरहूम' को मुसलमान होने से जन्नत में स्थान मिलेगा। जो-जो सामान बहिश्त में होता है, वह सब कुछ उन्हें मिलेगा। 'आँजहानी' का स्थान दोजख में होगा। उसे दोजख की आग में जलना होगा।

इसका सीधा अर्थ यह है कि महात्मा गाँधी यदि स्वयं को कहीं दिवंगत लिख जाते तो यह अनुवादक उनको भी दोजख में कोई झोंपड़ी या कमरा अलाट कर देता।

खुशवन्तसिंह आँजहानी:- अब वयोवृद्ध पत्रकार श्रीयुत् खुशवन्तसिंह का निधन हुआ है। उनको राष्ट्रपति तथा उपराष्ट्रपति दोनों ने श्रद्धाञ्जलि दी। मैंने उर्दू के टी.वी. चैनल में दोनों की श्रद्धाञ्जलि सुनी और पढ़ी। दोनों में वही भेद पाया जो महात्मा गाँधी की आत्मकथा के उर्दू संस्करण तथा अन्य भाषाओं के संस्करण में है। उपराष्ट्रपति डॉ. हामिद अनसारी जी ने श्रीयुत् खुशवन्तसिंह का 'आँजहानी' कहकर श्रद्धाञ्जलि दी। भले ही खुशवन्तसिंह धर्मनिरपेक्षता की माला फेरने वालों में बहुत आगे थे परन्तु उपराष्ट्रपति उनको अल्लाह की दया तथा बहिश्त से वञ्चित करते हैं। कलमा न पढ़ने तथा सिख होने से उनका स्थान दोजख में रहेगा। प्रसंग हो या न हो आज कई दलों व अनेक नेताओं को धर्मनिरपेक्षता का दौरा पड़ता रहता है। ऐसे सब लोग नोट कर लें कि इन में जो मुसलमान नहीं, वे दोजख की आग का ईंधन हैं। यह मेरा मत नहीं, यह डॉ. अंसारी जी जैसे गुणियों का अटल विश्वास है।

हमारा मत तो निर्विवाद है। ऋषि दयानन्द जी ने लिखा है पापी सब मत में दु:ख ही भोगेंगे। धर्मात्मा जो भी हैं, जिस भी मत में हैं- वे सब सुख पायेंगे। स्वर्ग तथा नरक कोई लोक विशेष नहीं हैं। अवस्था विशेष का नाम स्वर्ग व नरक है। सत्कर्म से स्वर्ग तथा दुष्कर्म से नरक-दु:ख ही भोगना पड़ता है।

ऐसा स्वस्थ, स्पष्ट, वैज्ञानिक तथा असाम्प्रदायिक दृष्टिकोण वेदवेत्ता ऋषि दयानन्द ने इस युग में विश्व को दिया है। क्या इस देश के बड़े-बड़े राजनेता महर्षि दयानन्द जी महाराज की इस महानता तथा विलक्षणता को स्वीकार करके इसे प्रचारित करने का साहस दिखायेंगे?

नारी सम्मान का इतिहास:- ऋषि-जीवन में इन पंक्तियों के लेखक ने इस विषय पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। परोपकारी में राव युधिष्ठिर सिंह पर लिखते हुए यह बताया गया था कि उनकी पत्नी विश्व-इतिहास की ऐसी सर्वप्रथम महिला है जिसे किसी संस्था ने आधुनिक युग में अपनी प्रधाना चुना। इस देवी को सन् १८८५ के आसपास रेवाड़ी आर्यसमाज की प्रधाना चुना गया। परोपकारी में छपी तड़प झड़प को पढ़कर कुछ प्रेमियों ने विश्व इतिहास में आधुनिक काल में नारी सम्मान के इतिहास की एक झांकी देने की माँग की है। विचारशील पाठकों के इस सुझाव का हम स्वागत करते हैं।

कार्यक्षेत्र में उतरते ही ऋषि जी ने नारी उत्थान के लिए प्रेरणा देनी आरम्भ कर दी परन्तु वह दिन इस दृष्टि से

ऐतिहासिक था जब माई भागवती ने अपनी शंकाओं के निवारण हो जाने पर ऋषि जी से अपने योग्य कोई सेवा पूछी तो ऋषिवर ने कहा, जितना ज्ञान तुम्हारे पास है, वह तुम स्त्री जाति को दो। यही मेरी सेवा है। बस नारी उत्थान का शंखनाद विधिवत् उसी दिन मुम्बई में कर दिया गया। जब लाडकुँवर जी को रेवाड़ी समाज ने सर्वसम्मति से प्रधाना चुन लिया तब तक संसार में कहीं भी महिलाओं को पुरुषों के समान वोट देने का अधिकार नहीं था।

इस घटना के आठ वर्ष पश्चात् सन् १८९३ में न्यूजीलैण्ड में स्त्रियों को भी पुरुषों के समान चुनाव में भाग लेने या वोट देने का अधिकार दिया गया। डैनमार्क में सन् १९१५ में इस सिद्धान्त को अपनाया गया। हॉलैण्ड तथा रूस में १९१७ में यह अधिकार दिया गया। चेकोस्लोवाकिया, आस्ट्रिया, पॉलैण्ड और स्वीडन ने १९१८ में, अमेरिका ने सन् १९२०, इंग्लैण्ड ने १९२८, दक्षिण अफ्रीका ने १९३०, स्पेन ने १९३१, रुमानिया तथा बर्मा ने सन् १९३५ में तथा फिलपाईन ने सन् १९३७ में स्त्रियों को पुरुषों के समान मत देने का अधिकार दिया। और भी कई देशों में इस बीच में नारी का सम्मान प्राप्त हो गया।

यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि भारत के पड़ौसी देश थाईलैण्ड में १९३४ ई. तथा बर्मा में सन् १९३७ में नारी को मत देने के अधिकार प्राप्त हो सका। इन दो एशियाई देशों से अर्ध शताब्दी पहले भारत में आर्यसमाज ने महिलाओं को समानता का अधिकार दे दिया था। यह सन्तोष की बात है कि परोपकारी ने वैचारिक हलचल पैदा कर दी है। अब सूझबूझ वाले युवकों को आर्यसमाज की यह देन और उपकार उपरोक्त तथ्यों को सामने रखकर संसार के सामने रखने का प्रयास करना चाहिये।

सुदर्शन जी क्या आर्यसमाजी थे?:- कई सुपठित स्वाध्याय प्रेमी पाठकों ने गत दो तीन वर्षों में बार-बार यह पूछा क्या कहानीकार सुदर्शन जी आर्य समाजी थे? समय-समय पर जब-जब यह प्रश्न पूछा गया, सबको यह बताया गया कि वह एक निष्ठावान् आर्य पत्रकार, साहित्यकार तथा कवि थे। अभी इन दिनों स्व. श्री क्षेमचन्द्र सुमन जी की एक उत्तम पुस्तक को पढ़ रहा था तो उसमें कभी अपने द्वारा चिह्नित एक वाक्य ने मेरा ध्यान खींच लिया। श्रीयुत् पण्डित जी के अन्तिम वर्षों में आपने यह लिख दिया कि सुदर्शन जी भी कभी आर्यसमाजी थे।

यह वाक्य पढ़कर मन में आया कि इस विषय में एक बार परोपकारी में कुछ लिखा जावे। आज यहाँ विस्तार से तो सुदर्शन जी के बारे में नहीं लिखा जा सकता और न ही उनके सम्बन्ध में अपने प्रेरक व रोचक संस्करण दे पाऊँगा। सुदर्शन जी जीवन के अन्तिम श्वास तक वेदनिष्ठ और ऋषि भक्त आर्यसमाजी रहे। बड़ी श्रद्धा से समाज के साप्ताहिक सत्संगों में भाग लेते थे। शरीर ढीला हो गया था सो सक्रिय सेवा करने में असमर्थ थे। वह कहानियों के माध्यम से तो अन्त तक वैदिक विचारधारा का प्रचार करते रहे। वैदिक साहित्य सृजन या सैद्धान्तिक लेख अन्तिम वर्षों में कभी नहीं लिखा।

आपके कुछ गीत कभी अत्यन्त लोकप्रिय थे। एक समय था आर्यसमाजी बड़े जोश से ये पंक्तियाँ गाया करते थे:-

पराई आग में जलना, मरीजों की दवा होना।
कोई सीखे दयानन्द से धर्म पे जाँ फ़िदा होना।।
नजर में मौत बसती हो, भंवर में किश्ती फंसी हो।
लगाना वेद का चप्पू किनारे पर हो जाना।।

ये पंक्तियाँ आप ही के एक भजन की हैं। आपने श्रीमद् दयानन्द प्रकाश का उर्दू अनुवाद किया जो अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। बच्चों के लिए हिन्दी तथा उर्दू में संक्षिप्त ऋषि-जीवन लिखे। हिन्दी में लिखा उनका बालोपयोगी ऋषि-जीवन परोपकारिणी सभा प्रकाशित करने जा रही है। इसके लिए मुजफ्फरनगर, उ.प्र. से श्री कर्णसिंह जी से स्थिर निधि की स्वीकृति मिल चुकी है। सुदर्शन जी ने महात्मा गाँधी जी के आर्यसमाज पर आक्रमण का उत्तर देते हुए कभी एक पठनीय पुस्तक लिखी थी। उर्दू के इस लोकप्रिय लेखक को हिन्दी सेवी आपकी पत्नी ने बनाया था। यह कैसे? यह रोचक कहानी कभी फिर लिखी जावेगी।

पं. लेखराम जी ऋषि चरणों में कब?:- श्रीयुत् विनय विद्यालङ्कार जी ने लेखक के ग्रन्थ रक्तसाक्षी पं. लेखराम का स्वाध्याय करते हुए चलभाष पर पूछा कि पं. लेखराम जी ऋषि दर्शन के लिए कब अजमेर पहुँचे। आप जैसे माननीय विद्वान् का प्रश्न पाकर मैंने उत्तर देते हुए कहा कि परोपकारी कुछ और लिख दिया जायेगा। आपने यह प्रश्न इसलिये उठाया क्योंकि मुद्रण दोष से पण्डित जी के उस जीवन चरित्र में दो बार भिन्न-भिन्न सन् छप गये थे। महर्षि ११ मई सन् १८८१ को पेशावर से चलकर १६ मई की रात्रि स्टेशन के समीप एक धर्मशाला में ठहर गये। अगले दिन १७ मई सन् १८८१ को ऋषि चरणों में उपस्थित होकर अपनी सब शंकाओं का निवारण किया।

डॉ. विनय विद्यालङ्कार जी जैसे वरिष्ठ तथा प्रतिष्ठित

विद्वान् तथ्यों व प्रमाणों की जाँच पड़ताल की इस प्रवृत्ति व चौकसी से सब नये पुराने लेखकों व वक्ताओं को कुछ सीखना चाहिए। आर्य सामाजिक पत्रों तथा पुस्तकों में बिना जाँच-पड़ताल के बहुत कुछ लिखा जाता है।

पं. शान्तिप्रकाश जी का ऐतिहासिक अभियोग:- परोपकारी के पाठकों को यह बताने की आवश्यकता नहीं कि आर्यसमाज के इतिहास में सबसे पहले सबसे लम्बा भाषण पूज्य पं. शान्तिप्रकाश जी ने कादियाँ में दिया था। यह भाषण साढ़े छ:-सात घण्टे का था। सरकार के चाटुकार मिर्ज़ाई लोगों ने अपनी अंग्रेज भक्ति का लाभ उठाकर सरकार से पण्डित जी पर केस चलवा दिया था। पूज्य पण्डित जी के हाथों व पैरों में बेड़ियाँ डालकर उन्हें कारागार में डाला गया।

पण्डित जी को हाईकोर्ट ने ससम्मान जेल से मुक्त किया। परोपकारी के प्रेमी श्री जितेन्द्र कुमार जी गुप्त वकील बठिण्डा वाले वर्षों से हाईकोर्ट के निर्णय की कॉपी लेने का उद्योग कर रहे हैं। आर्य जनता यह सुनकर आनन्दित होगी कि लाहौर से यह सूचना प्राप्त हुई है कि एक कृपालु वकील उस निर्णय की प्राप्ति का यत्न करने में लगे हैं। यह शीघ्र हमें प्राप्त हो जायेगी।

यह शास्त्रार्थ है किसका?:- एक प्रश्न भेजा गया है कि किसी का एक मुसलमान से शास्त्रार्थ हो गया बताते हैं। मुसलमान प्रश्नकर्त्ता ने पूछा कि स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि वैदिक ईश्वर मनुष्य का भविष्य नहीं जानता अत: वह सर्वज्ञ कैसे हुआ? कुरान का अल्लाह सब कुछ जानता है सो अल्लाह वेदों के ईश्वर से श्रेष्ठ सिद्ध हुआ।

उत्तरदाता ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने कहा है कि ईश्वर को आभास अवश्य है। वह ईश्वर किसी की सहायता के बिना जगत् का संचालन करता है। इस कारण सर्वशक्तिमान् है। यह है भेजे गये कथन का सार। शास्त्रार्थ किस-किस ने किया, यह नहीं बताया गया।

इस पर हम क्या टिप्पणी करें? इस शास्त्रार्थ महारथी की तृप्ति व तुष्टि की बात को जाने दीजिये। शास्त्रार्थ की विद्या के अनुसार उत्तर देते हुए शास्त्रार्थ महारथी ने न तो महर्षि का ठीक-ठीक कोई प्रमाण दिया और न इस्लामी विचारधारा पर प्रश्न करने के लिए उपयुक्त इलजामी सवाल व प्रश्न भी नहीं किया।

आभास का शास्त्रोक्त पारिभाषिक अर्थ समझे बिना इसका प्रयोग किया गया है। ईश्वर सर्वज्ञ है। वह कण-कण में है, वह हर मन में है, वह हर तन में है। वह प्रभु सब में ओतप्रोत है। इस कारण से वह सर्वज्ञ है। ''जैसा स्वतन्त्रता से जीव करता है, वैसा ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है। और जैसा ईश्वर जानता है, वैसा जीव करता है।''

ऋषि के वचन का मर्म आर्य दार्शनिकों तथा शास्त्रार्थ महारथियों के साहित्य की सहायता से समझने की आवश्यकता है।

अब रही बात कुरान के अल्लाह के सब कुछ जानने की तो शास्त्रार्थ करने वाले का इस्लाम की मुख्य-मुख्य बातों का भी ज्ञान होना चाहिए। पूछना चाहिये था- ''निकलना खुल्द से आदम का सुनते आये थे लेकिन'' इस पंक्ति का अर्थ अगले से पूछिये फिर पूछा जावे आदम को बहिश्त से क्यों निकाला गया? अल्लाह तो सब कुछ जानता है। आदम को निकालना पडेगा? क्या यह पता था या नहीं?

कुरान की सूर: अलहजर में आता है कि अल्लाह ने फरिश्तों को आदम के सामने सजद: करने का कहा। सबने अल्लाह का आदेश मानते हुए ऐसा कर दिया परन्तु उनके अग्रणी अब्लीस ने विद्रोह करके ऐसा करने से इनकार कर दिया। क्यों?

उससे जब अल्लाह ने इनकार का कारण पूछा तो उसने कहा कि मैं उससे श्रेष्ठतर हूँ। तूने मुझे आग से उत्पन्न किया परन्तु आदमी को खनखनाते सड़े गारे से बनाया।

बस कुरान के ये प्रमाण, यह कहानी शास्त्रार्थ महारथी के सामने खड़े प्रतिपक्षी को निरुत्तर करने को पर्याप्त थी। दुर्भाग्य से व्यापक तथा गम्भीर अध्ययन के बिना हम स्वयं को जितना समझ लेते हैं बात वह है नहीं।

इस्लाम का वैदिक रंग:- तुलनात्मक धर्माध्ययन करने वालों तथा वैदिक धर्म की श्रेष्ठता को जानने की चाहना रखने वालों को एक शिरोमणि मुस्लिम कवि की ये पंक्तियाँ प्रचारित करनी चाहिये:-

तायत में ता न रहे मय अंगबीं की लाग।
दोज़ख़ में डाल दो कोई बहिश्त को।

मौलाना हाली की कोटि का विद्वान् इस पद्य पर लिखता है जब तक बहिश्त है लोग वहाँ के मधु मदिरा के लोभ में भक्ति करते हैं। अत: इस प्रकार के बहिश्त को दोजख में फैंक दो ताकि प्रलोभन से उपासना न करें। कुरान में बहिश्त की अनेक आयतें हैं। क्या यह अल्लाह पर चोट नहीं? क्या यही बात ऋषि ने नहीं की कि यह उपासना नहीं है?

पकड़े जाते हैं फरिश्तों के लिखे पर नाहक।
आदमी कोई हमारा दमे तहरीर भी था?

कुरान का अल्लाह सब कुछ जानता है या नहीं परन्तु दो फरिश्ते मनुष्यों के कर्मों का लेखा-जोखा लिखते हैं। मनुष्य का कोई साक्षी तो लिखते समय होता नहीं। दूसरे पक्ष की सुने बिना, साक्षी के बिना निर्णय देना किधर का न्याय हुआ।

हज का सबाब नज़र करूँगा इज़ूर की।

कर्म का फल कर्ता को मिलता है। कर्म कोई करे फल कोई और भोगे?

यह कहाँ का ईश्वरीय न्याय है। हज करने का पुण्य दूसरे को देने को कुफर नहीं माना गया। कोई इसे इस्लाम का खण्डन नहीं कहता। कोई इसे अल्लाह तथा कुरान का निरादर नहीं कहता। यह है इस्लाम का इस्लामी खण्डन। यह तो पुराने समय की बातें हैं। इस युग में विद्वान् मौलवी खुलकर पाप करवाने वाले शैतान को नहीं शैतान के जनक को दोषी मानते हैं। यह है इस्लाम का वैदिक रंग। प्रमाण फिर देंगे।

कुछ प्रतिक्रियायें:- मार्च प्रथम तथा मार्च द्वितीय २०१४ के अंकों में प्रकाशित 'कुछ तड़प-कुछ झड़प' पर कई वरिष्ठ विद्वानों, लेखकों तथा प्रबुद्ध पाठकों की चलभाष द्वारा सीधी प्रतिक्रियायें पाकर अपने पुरुषार्थ को सार्थक जाना। 'अमैथुनी सृष्टि' विषयक शंकाओं के उत्तर पर कई पूज्य विद्वानों ने कहा कि यह अपनी शैली का एक मौलिक, रोचक तथा प्रमाणों से परिपूर्ण प्रथम लेख है। इसमें सेवक की विशेषता नहीं, स्वामी वेदानन्द, स्वामी सत्यप्रकाश के पुण्य प्रताप का फल है जिनकी संगत की रंगत से यह ज्ञान प्राप्त हुआ। मार्च द्वितीय के अंक में 'कल्याण के वार का स्वागत' पढ़कर आचार्य सोमदेव जी तथा आर्य विद्वान् पत्रकार श्री सत्येन्द्र सिंह जी तो गद्गद् हो गये। मान्य सत्येन्द्र जी ने इस विषय का एक ट्रैक्ट तैयार करने की प्रेरणा दी है। दयानन्द सन्देश में इस प्रहार के उत्तर में क्रमशः दो लेख छप चुके हैं। दोनों पत्रों में यह ठोस, तथ्यपूर्ण, युक्तियुक्त सप्रमाण उत्तर पढ़कर आर्यों का स्वाभिमान अंगड़ाई लेने लगा है। इसका श्रेय गुजरात के आर्यवीर श्री कपिलदेव जी ओझा को देना चाहिये। 'परोपकारी' तो सदैव ऐसी सेवा के लिये तत्पर रहता है। श्री स्वामी विष्वङ् जी, मान्य सत्यजित् जी तथा आदरणीय सोमदेव जी ने चिन्तन, प्रश्नोत्तर तथा जिज्ञासा समाधान की लहर चलाकर पं. लेखराम जी, श्रद्धेय देहलवी जी के अतीत को वर्तमान करके भारी उपकार किया है।

राव युधिष्ठिर सिंह जी का चित्र देखकर उनपर टिप्पणी पढ़कर कई एक ने सम्पर्क किया है। स्वामी सुधानन्द जी ने भी रेवाड़ी क्षेत्र के आर्य पर एक लघु पुस्तिका लिखने की प्रेरणा दी है। वह उस क्षेत्र में घर-घर में इसे पहुँचायेंगे। यह कार्य भी अवश्य हो जायेगा।

मान्य चैतन्यमुनि जी की प्रतिक्रिया के लिए आभार मानता हूँ। बात यह है कि जो लेख मुझे उत्तर देने के लिये दिखाया गया था, वह आर्यजगत् में छपा था। मुझे वह अंश पढ़वाया गया था। सम्भव है महाराज के छपे लेख के आगे वह किसी दूसरे का लेख हो। बिना देखे-पढ़े मैं लिखता नहीं। आर्य पत्रों में ऐसी काल्पनिक कहानियाँ छपवाने का बड़ों-बड़ों को फैशन है। आर्यजगत् के फरवरी २०१४ के एक अंक में महाराज ने यह खोज छपवाई है कि लोकमान्य तिलक ने 'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है' यह कथन सत्यार्थ प्रकाश से .....शब्द चाहे कुछ और हैं भाव यही है। यह सत्य है कि देशभर में ऋषि ने वैचारिक क्रान्ति का शंख फूँका। श्री तिलक भी अछूते नहीं रहे परन्तु लोकमान्य तिलक ने कहीं यह संकेत दिया हो- महाराष्ट्र में तो कोई यह नहीं जानता। यह सेवक भी महाराष्ट्र में रहते हुए खोज में संलग्न रहा। श्री कुशलदेव जी, ब्रह्ममुनि जी को तो यह ज्ञान प्राप्त न हो सका। सद्धर्म प्रचारक में छपे लोकमान्य तिलक के एक मित्र और उनके गुरु चिपलूणकर जी के एक चेले का लेख अनूदित करके मैंने वेदवाणी में छपवाया था। काश कि आप ने यह लेख पढ़ा होता। चिपलूणकर के चेले तो ऋषि के ग्रन्थों को छूते भी नहीं थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के चुम्बकीय व्यक्तित्व से प्रभावित होकर लोकमान्य तिलक जी ने गीता रहस्य में स्वामी जी को आधुनिक युग में निष्काम कर्म का मूर्तस्वरूप माना है। महर्षि के बलिदान पर केसरी में सम्पादकीय तो लिखा परन्तु हृदय उंडेलकर कभी कुछ नहीं लिखा। मैंने इस तड़प-झड़प में भावेश जी का भूल सुधार करवाने का अवसर देने पर आभार प्रकट किया है। सबसे विनती है कि आर्यसमाज की शोभा के लिये जाँच पड़ताल, मिलान किये बिना कुछ भी अप्रमाणिक न लिखा करें।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १२ से १९ अक्टूबर, २०१४

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१२ से १९ अक्टूबर, २०१४- **योग-साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर),**
सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

ऋषि मेला - ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर २०१४

वैशेषिक-दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान, में अध्ययन-अध्यापन का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। उसी क्रम में वैशेषिक दर्शन **(स्वामी ब्रह्ममुनि भाष्य सहित)** का **स्वामी विष्वङ् परिव्राजक** द्वारा श्रावण कृष्ण चतुर्थी २०७१ वि. (तदनुसार १५ जुलाई २०१४ ई.) से विधिवत् नियमित सम्पूर्ण अध्यापन कराया जायेगा।

वैशेषिक दर्शन महर्षि कणाद के द्वारा रचित ग्रन्थ है जो कि दस अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय में दो आह्निक हैं। इस दर्शन का विषय द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, इन छह पदार्थों के धर्म के तत्त्वज्ञान से अभ्युदय और निःश्रेयस की प्राप्ति कहा है। यह द्रव्य के गुण, कर्मादि के लक्षण सहित किसी कार्य द्रव्य के कारणों का विशद् विवेचन प्रस्तुत करता है।

यह दर्शन ५-६ महिनों में पूर्ण होगा।

इस काल में प्रातः व सायं उपदेश भी सुनने को मिलेगा। बीच-बीच में विभिन्न विद्वानों द्वारा अन्य विविध विषयों पर भी कक्षा एवं उपदेश होते रहेंगे। ब्रह्मचारियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास व भोजन व्यवस्था निःशुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं-बहनों के लिए निवास की पृथक् व्यवस्था रहेगी। **सम्पर्क**-९४१४००३७५६ (स्वामी विष्वङ्) **सायं ५.३० से ६.००**। **पता**-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.), ईमेल-psabhaa@gmail.com

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

।। ओ३म् ।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

मसालों का शहँशाह

मसाला उद्योग जगत के शहंशाह के रूप में मशहूर महाशय धर्मपाल जी के विगत संघर्षमय जीवन और इनकी बेमिसाल उपलब्धियों को देखते हुए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि ऐसे पुरुषार्थी, कर्मयोगी पुरुष करोड़ों में एक होते हैं, जो अपने संघर्ष से मन की इच्छाओं को मूर्तिमान् रूप दे देते हैं।

एमडीएच रूपी जो पौधा इन्होंने अपने हाथों से लगाया, उसे अपनी कड़ी मेहनत के पसीने से सींच-सींचकर एक विशाल वटवृक्ष का आकार दिया और यह विशाल वटवृक्ष आज भी दिन दूनी रात चौगुनी की रफ्तार में ऊँचाई की ओर अग्रसर है।

महाशय धर्मपाल जी का कहना है कि एमडीएच की तरक्की के पीछे उन उत्तम संस्कारों और आदर्शों की ही सबसे बड़ी भूमिका है, जिनके बीज बचपन में ही मेरी पूजनीया माता चन्नन देवी जी और पूज्य पिता महाशय चुन्नीलाल जी ने मेरे अंत:करण में बोए थे और मेरी भूमिका सिर्फ इतनी रही कि मैंने उन बीजों को पूरी तरह अंकुरित होने के लिए बेहतर वातावरण उपलब्ध कराया।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् पूरा संसार अपना परिवार है, यह महाशय जी का आदर्श वाक्य है और इसे इन्होंने मनसा-वाचा-कर्मणा पूरी तरह चरितार्थ कर दिखाया है।

एमडीएच परिवार की ओर से दिल्ली के जनकपुरी में माता चन्नन देवी अस्पताल की स्थापना की गई है, मुख्य संरक्षक की भूमिका में महाशय जी अस्पताल के सेवा-कार्यों की खुद देखभाल करते हैं, कहने का मतलब यह है कि महाशय धर्मपाल जी का संघर्ष व्यावसायिक उत्थान के साथ-साथ समाज-सेवा को लेकर भी समर्पित है और व्यावसायिक कार्यों की व्यस्तता के बावजूद समाज-सेवा में इनकी पूरी दिलचस्पी रहती है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी के सच्चे अनुयायी महाशय जी ने आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है तथा तन-मन-धन से सहयोग प्रदान किया है।

महाशय धर्मपाल जी का जन्म एक बहुत ही साधारण, किन्तु संस्कारों की सम्पदा से सम्पन्न परिवार में हुआ था। बचपन में मस्तमौला स्वभाव होने की वजह से किताब के पन्नों में सिर खपाना इन्हें रास न आया और पिता महाशय चुन्नीलाल जी इनकी मानसिकता से पूरी तरह परिचित थे।

व्यावसायिक गुत्थियों को सुलझाने में परिपक्वता हासिल कर सके। उस काम से जुड़कर ही महाशय जी ने मसालों के बारे में छोटी-सी उम्र में ही बेसिक नॉलेज हासिल कर ली। फिर शुरुआती कुछ वर्षों तक क्रमश: लकड़ी का काम सीखा, साबुन बनाने का काम किया, कपड़े की दुकान पर शागिर्दी में रहे, हार्डवेयर का काम किया, चावलों की फैक्ट्री में काम किया, रेहड़ी लेकर दो-दो पैसे की मेहन्दी गली-गली बिक्री करते रहे और आखिर में फिर मसालों के अपने उसी पुश्तैनी कारोबार में आ डटे।

पाकिस्तान की हद में आने वाली अपनी जन्मभूमि से सदा-सदा के लिए नाता तोड़कर महाशय जी दिल्ली चले आए।

सुहावनी सुबह में नई दिल्ली के कुतुब रोड तांगा स्टैंड पर अपने तांगे पर सवार होकर जोर से चिल्ला रहा था- ''साब...दो आना सवारी टेशन...साब... दो आना सवारी...। साब...टेशन बैठो... दो आने ...दो आने...। वह तांगे पर चाबुक फटकारते हुए लगातार चिल्लाता जा रहा था,'' लेकिन कोई सवारी नहीं मिल रही थी उसके मुख से निकले शब्दों और लिबास से साफ लग रहा था कि वह कोई रिफ्यूजी है।

पेट के लिए मेहनत और ईमानदारी से किया गया कोई काम बुरा नहीं होता, लेकिन यह काम तेरे लायक नहीं है। तू तांगा चलाता रहा, तो बड़ा आदमी कैसे बनेगा.. छोड़ यह काम और कोई दूसरा धन्धा कर।

बहन उसे परिवार के अन्य लोगों के साथ खाना परोस देती है, मगर उसका ध्यान कहीं और है। आखिरकार युवक उसी दिन तांगा बेचकर अपना पुश्तैनी कारोबार फिर शुरु करने का फैसला लेता है। फिर वह घोड़ा-तांगा बेचने निकल पड़ता है, तो विधाता उसे देखकर हौले-हौले मुस्करा रहा है, क्योंकि युवक के भाग्य ने नियत समय पर करवट जो ली है। अब वह एक ऐसे कारोबार की तरफ कदम बढ़ाने जा रहा है, जिसे भविष्य में एक अनुकरणीय इतिहास बनना है।

तांगा बेचने के बाद शुरु हुआ मसाला जगत् में बादशाहत कायम करने का सिलसिला, जिसे महाशय जी जैसे कर्मयोग के सच्चे साधक ने पूर्णता की ओर अग्रसर कर दिया और आखिरकार मसाला-उद्योग जगत के शहँशाह का खिताब पाया।

तांगे के कोचवान की सीट से मसालों के शहँशाह के सिंहासन तक पहुँचने की यह अनोखी दास्तान है महाशय जी की जीवनी।

अमर शहीद कुं. प्रताप

- फतहसिंह मानव

पिछले अंक का शेष भाग...

जब, दिल्ली के लाल-किले के बैरेक्स में प्रताप को बन्दी बना कर रखा गया था, उसी समय, बंगाल के प्रसिद्ध क्राँतिकारी श्री शचीन्द्रनाथ शान्याल भी सह-बन्दी थे। उन्होंने अपने संस्मरण बङ्गला-भाषा में काला-पानी की सजा भुगतने के पश्चात् लिखे, और उस पुस्तक का नाम है, ''बन्दी-जीवन'' का हिन्दी भाषा में अनुवाद, प्रसिद्ध इतिहासकार श्री जयचन्द्र जी विद्यालंकार ने किया था। इसमें एक अध्याय ''प्रताप की कहानी'' शीर्षक से है। इसकी नक्ल, पत्र के साथ संलग्न कर रहा हूँ।

श्री शान्याल ने ''प्रताप की कहानी'' में लिखा है कि, जब हम लोग दिल्ली के लाल-किला की बैरक में बन्दी थे, तब मेरी बैरक भी प्रताप की बैरक के पास ही थी। श्री शान्याल ने आगे लिख है ''प्रताप, सबसे कम उम्र के कैदी थे। उनकी उम्र करीबन अठारह वर्ष की रही होगी। वे राजपूताना के एक उच्च-कुल के चारण-परिवार के सदस्य थे प्रताप की कम उम्र देखते हुए, ब्रिटिश C.I.D. Officers ने सबसे पहले उसी पर डोरे डालने शुरु किए।''

दिल्ली के C.I.D. अधिकारियों को अच्छी तरह मालूम था कि, जितने भी क्राँतिकारी कैदी इस समय मौजूद थे, उनमें प्रताप की स्थिति सबसे विकट थी। उसके पिता, केसरीसिंह जी को ''कोटा कत्ल एवं राज-द्रोह में बीस वर्ष का आजन्म सश्रम-कारावास देकर सुदूर बिहार की ''हजारी-बाग सैंट्रल जेल'' के काल कोठरी में बन्द कर रखा गया था। प्रताप के चाचा श्री जोरावरसिंह को Nimej Mahan Murder case, १९०४, में आरा (बिहार-प्रान्त) के जिले के ब्रिटिश सेशन जज ने फाँसी की सजा दी थी और तभी से वह अपने सर पर कफन-बाँध, कहीं वन-बीहडों में मारे-मारे फिर रहा था। प्रताप का पैतृक गाँव, ''देव-खेड़ा'' शाहपुरा मेवाड़ के अर्द्ध-स्वतन्त्र-राज्य में था और शाहपुरा नगर में ही स्थित उसकी गढ़-नुमा हवेली थी जिसे भी वहाँ के राजाधिराज श्री नाहरसिंह जी ने स्वयं के लोभ-वश एवं अँगरेजों को खुश करने की गरज से, बिना किसी आधार के जब्त कर लिया और हवेली के अन्दर के बर्तन तक नीलाम करवा दिये थे। इस प्रकार, राजाधिराज श्री नाहरसिंह जी ने प्रताप के बहुत विद्वान् एवं सम्पन्न-परिवार को दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर कर दिया था। फलस्वरूप, प्रताप की माता अपने तीन छोटे-छोटे बच्चों को लेकर अपने पीहर कोटा रियासत में अपने भाई के पास चली गयीं थीं। प्रताप की माताश्री रात-दिन उसके वियोग में निरन्तर आँसू बहाती रहती थीं।

श्री शान्याल ने ''बन्दी-जीवन'' आगे लिखा है कि राजपूताना में दुहरी-गुलामी थी यानी एक ब्रिटिश गवर्न्मेंट की और दूसरी, राजा-महाराजाओं की । राजपूताना में सर्व-प्रथम श्री केसरीसिंह जी बारहठ, कोटा अपने सम्पूर्ण परिवार के साथ ''स्वतन्त्रता-संग्राम'' में कूद पड़े थे।

श्री शान्याल ने आगे लिखा है कि ब्रिटिश सी.आई.डी. के उच्चाधिकारियों ने बन्दी प्रताप की दु:खती नब्ज को पकड़ा और उसे फुसलाते हुए कहा कि तुम्हारी माता, तुम्हारे वियोग में रात-दिन रो-रो कर अपने प्राण दे रही है इसलिए तुम यदि अपने सभी साथियों के नाम बतला दोगे तो तुम्हारे पिता केसरीसिंह को हजारीबाग सैंट्रल जेल से रिहा कर दिया जायेगा और तुम्हारी जागीर का गाँव का और तुम्हारी हवेली भी तुम्हें लौटा दी जायेगी। श्री शान्याल ने लिखा है कि कुछ दिन तक तो प्रताप, इन प्रलोभनों पर विचार करता रहा और फिर अधिकारियों से कहा'' ''मुझे चौबीस घण्टे का समय और सोचने के लिए दिया जाये।'' श्री शान्याल लिखता है- ''मैं अपने बैरक में पड़ा-पड़ा सोच रहा था कि राजपूताना का यह युवक, न जाने क्या-क्या बातें सी.आई.डी. अधिकारियों के सामने उगलेगा और उसके अन्य साथियों पर क्या बीतेगी?'' दूसरे दिन जब, सी.आई.डी. के अधिकारी, बन्दी प्रताप की बैरक में गये तो वे बड़ी उत्सुकता से बोले, ''शाबास प्रताप। अब बोलो''। इस पर प्रताप ने दृढ़ता से यह जवाब दिया''देखिये, मैंने खूब अच्छी तरह से सोच-समझ लिया है कि अभी तक तो केवल मेरी एक माँ ही रो रही हैं और यदि मैंने सही-सही बातें बता दीं तो न जाने देश की कितनी हजारों माताओं को रोना पड़ेगा इसलिए मेरी एक ही माँ को रोने दो। अत: मैं अब और कुछ भी नहीं बताऊँगा।'' श्री शान्याल ने लिखा है कि प्रताप के इस निर्भीक उत्तर से सी.आई.डी. अधिकारी निराश हो कर लौट गये और हमारे भी जान में जान आई। वास्तव में प्रताप का यह उत्तर एक ऐतिहासिक उत्तर था, जो एक सच्चे क्राँतिकारी देश भक्त को देना चाहिए था । श्री शान्याल ने लिखा है कि देश का दुर्भाग्य है कि प्रताप, जैसा नव-युवक आज मौजूद नहीं है।

इसके पश्चात् प्रतापसिंह, शचीन्द्रनाथ शान्याल आदि अन्य बन्दियों पर प्रसिद्ध Benares Conspiracy Case, 1915, चलाया गया और इस मुकदमे में बन्दी प्रतापसिंह को पाँच साल के कठोर कारावास की सजा दी गयी तथा सजा काटने के लिए उसे बरेली सैंट्रल जेल भेजा गया। प्रताप के सह-बन्दी शचीन्द्रनाथ शान्याल आदि को कालापानी की सजा दी गयी थी। बन्दी प्रताप को बरेली सैंट्रल जेल के काल-कोठरी रखा गया। यह कोठरी साइज में ६×३ का एक तंग कमरा होता था, जिसमें कैदी, केवल करवट-मात्र बदल सकता था। इस कमरे के Ventilator भी नहीं होता था। इस काल-कोठरी का जीवन इतना कष्ट-प्रद होता था कि छह-सात दिन में ही कैदी के हाल-बेहाल हो जाते थे और वह जुर्म कबूल करने को तैयार हो जाता था। यह भी एक विचित्र संयोग की बात है कि प्रताप के पिता श्री केसरीसिंह जी, बिहार की ''हजारी बाग'' जेल में बन्दी थे और उनका पुत्र प्रताप बरेली सैंट्रल जेल में बन्दी था। हिन्दी के एक जाने-माने विद्वान् जिनका नाम निम्न-हस्ताक्षरकर्ता को इस समय स्मरण नहीं आ रहा है, हिन्दी की एक प्रसिद्ध पत्रिका में लेख लिखा था, जिसका शीर्षक था, ''पिता-पुत्र, दोनों क्राँतिकारी थे।''

इसके पूर्व कि बन्दी प्रताप की ''बरेली-सैंट्रल-जेल'' की व्यथा-कथा का वर्णन किया जाय, बन्दी कुँ. प्रताप के साथी श्री रामनारायण जी चौधरी, जो कालान्तर में अजमेर से प्रकाशित होने-वाले प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र ''नव-ज्योति'' के संस्थापक-सम्पादक बने एवं महात्मा गाँधी के साथ वर्धा-आश्रम में भी रहे थे तथा उत्तर-जीवन में ''गाँधीवाद'' के चिन्तक रूप में विख्यात हुए एवं, जिन्होंने ''अभिनव राजस्थान'' नाम की प्रसिद्ध पुस्तक लिखी, वे अपने संस्मरणों में लिखते हैं:-

''एक बार, प्रताप, लगातार तीन दिन और तीन-रात तक, बिना सोये काम करते रहे और फिर सोये तो ऐसे सोये कि तीन दिन और तीन रात तक, उठने का नाम ही नहीं लिया। ऐसा सधा हुआ था, प्रताप का शरीर और मन!''

श्री चौधरी आगे लिखते हैं ''श्रीमद्भगवद्गीता में कर्म-योगी की, जो परिभाषा दी गयी है, उसका सही दर्शन, प्रताप में होता था। उनमें 'कामिनी और कन्चन' के प्रति पूर्ण-विरक्ति थी। यदि मेरे जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा तो प्रथम था, राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधी का और द्वितीय था, कुँवर प्रताप का। यदि प्रताप, आज जीवित होते तो वे महात्मा गाँधी के दाँये हाथ होते।''

वास्तव में, ऐसा ही है सच्चा एवं सार्थक मानव-जीवन। अंग्रेजी भाषा में इस सम्बन्ध में एक सुन्दर कहावत है:- ''Cowards Die Many A Times Before Their Death'' प्रताप, शौर्य एवं वीरता की धरती राजस्थान में पैदा हुआ था। वह यथा नाम तथा गुण था।

''बरेली-सैन्ट्रल जेल'' में बन्दी प्रताप को अकथनीय यातनाएँ दी गई। जेल की अमानुषिक यातनाएँ सहते-सहते, प्रताप की कोमल-काया पूर्ण-रूपेण क्लान्त हो चुकी थी और एक दिन दिनांक २४ मई १९१३ को मात्र बीस वर्ष की आयु में उसके प्राणों ने देह का साथ छोड़ दिया। बरेली की जनता ने प्रताप के शव को अन्तिम-संस्कार करने हेतु माँगा परन्तु ब्रिटिश जेल-अधिकारियों ने उसके शव को इसलिए उन्हें नहीं दिया कि बरेली की जनता में कहीं आक्रोश फैल कर, बल्वा (RIOT) न हो जाये। ब्रिटिश जेल-अधिकारियों ने, बन्दी प्रताप के हिन्दू होते होते हुए भी उसके शव को ''बरेली सैन्ट्रल जेल'' के विशाल-परिसर में कब्र खोद कर दफना दिया ताकि धुँआ न निकले और बरेली की जनता को इसका पता न चल सके। इस प्रकार सन् १८५७ के ''प्रथम-स्वतन्त्रता-संग्राम'' के पश्चात्, बन्दी प्रताप की देश में यह प्रथम कुर्बानी थी। प्रताप मर कर भी अमर हो गया। धन्य है मातृ-भूमि के सपूत को!

प्रताप के पितु: श्री केसरीसिंह जी ने अन्यत्र लिखा है कि उन्हें उसी रात, हजारी बाग सैन्ट्रल-जेल में स्वप्न आया कि जैसे, प्रताप हाथी के हौदे पर बैठा हुआ समुद्र में जा रहा है और वह अचानक समुद्र में कूद पड़ता है। श्री केसरीसिंह जी ने एक स्थित-प्रज्ञ की भाँति उसी समय समझ लिया कि प्रताप का शरीर अब नहीं रहा और उसके प्राण, अनन्त में विलीन हो गये।

ठाकुर केसरीसिंह जी, जब प्रथम-विश्व युद्ध (१९१४-१९१९) की समाप्ति के बाद सन् १९१९, १९जुलाई को रिहा होकर कोटा लौटे तो उनके बहुत-से प्रशंसक एवं रिश्तेदार, 'कोटा जंक्शन' पर स्वागतार्थ पहुँचे। उस समय, डॉ. गुरु दित्तामल जी ने श्री केसरीसिंह जी से अनायास ही पूछा ''ठाकुर साहिब! आपने प्रताप का तो सुन ही लिया होगा?'' श्री केसरीसिंह जी ने वज्र-हृदय से उन्हें सूक्ष्म उत्तर दिया 'हाँ, आप ही के मुँह से' और फिर दूसरों से बात करने लग गये। प्रताप, जैसे होनहार एवं वीर युवा-पुत्र को खोकर भी श्री केसरीसिंह जी, एक स्थित-प्रज्ञ की भाँति तनिक भी विचलित नहीं हुए। अन्त में, जब वे

अपनी ससुराल ठिकाना कोटड़ी पहुँचे, जहाँ उनकी सह-धर्मिणी श्रीमती माणिक कँवर जी, अपने अल्प-वयस्क एक पुत्र और दो पुत्रियों को लिए रहती थीं- वास्तव में उनका हाल-बेहाल था, उन पर विपत्ति की पराकाष्ठा थी। श्रीमती माणिक कँवर जी रात-भर रोती रहती थीं और रात्रि में अपने घर का दरवाजा खुला रखती थीं, इस आशंका से कि कहीं उनका लाडला पुत्र प्रताप, घर का दरवाजा बन्द देख कर, वापस न लौट जाय।

ठाकुर केसरीसिंह जी ने अपनी सह-धर्मिणी को समझाया कि ''मणि! तुम प्रताप के लिए इस तरह विलाप करना छोड़ दो। प्रताप ने, जिस कार्य को करने के लिए जन्म लिया था, उसे वीरता-पूर्वक पूरा करके वह अपनी मातृ-भूमि के लिए शहीद हो गया। अत: प्रताप के वियोग में दु:खी न होकर, इस बात पर गर्व करो कि तुमने प्रताप, जैसे वीर-पुत्र को जन्म दिया है। **ठाकुर केसरीसिंह जी ने अपनी पद्यात्मक सूक्ष्म 'आत्म-कथा' में (हरिगीतिका छन्द) 'प्रिय वीर पुत्र प्रताप-सा, वेदी बली पर चढ़ गया, भ्रात जोरावर हुआ प्यारा, निछावर पथ वही।''**

अन्त में, जब १५ अगस्त १९४७ को देश आजाद हुआ तो, अर्द्ध-स्वतन्त्र राज्य शाहपुरा के प्रथम लोक-प्रिय प्रधान-मन्त्री श्री गोकुल लाल जी आसावा एवं उनकी सरकार के मुख्य-सचिव श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा ने ठाकुर केसरीसिंह जी को शाहपुरा-स्थित, उनकी पुश्तैनी विशाल गढ़-नुमा हवेली को ठाकुर केसरीसिंह जी के वंशजों को लौटा दी। परन्तु तब तक ठाकुर केसरीसिंह जी एवं उनके दोनों छोटे भ्राताओं, श्री किशोरसिंह जी एवं क्रान्तिवीर जोरावरसिंह जी का निधन हो चुका था इसलिए ठाकुर केसरीसिंह जी के छोटे पुत्र, श्री रणजीत सिंह जी एवं उनकी पुत्री स्वतन्त्रता सेनानी कुमारी नगेन्द्रबाला जी, शाहपुरा पहुँचे और हवेली का कब्जा पुन: प्राप्त किया।

देश के आजाद होने पर शाहपुरा नगर के उत्तर दिशा में स्थित स्नातकोत्तर कॉलेज को राजस्थान सरकार ने 'प्रतापसिंह बारहठ स्नातकोत्तर कॉलेज' का नाम दिया और मुख्य-मन्त्री श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया ने इसका विधिवत् शुभारम्भ किया। यहाँ, कॉलेज के मुख्य-द्वार पर एक छोटे-से पार्क में अमर-शहीद कुँअर प्रताप की सुन्दर प्रतिमा लगी हुई है। शाहपुरा नगर की एक-मात्र हायर सैकण्ड्री गर्ल्स हाई स्कूल को ''वीर-माता श्रीमती माणिक कँवर हायर सैकण्डरी गर्ल्स हाई-स्कूल'' नाम दिया गया है। यहाँ पर भी वीर-माता माणिक कँवर जी की सुन्दर प्रतिमा लगी हुई है। समग्र राजस्थान में केवल शाहपुरा नगर ही ऐसा है, जहाँ उसके वीर-सपूत अमर-शहीद कुँअर प्रताप के नाम पर स्नातकोत्तर कॉलेज और उसकी वीर-माता के नाम पर हायर सैकण्ड्री गर्ल्स हायर सैकण्ड्री स्कूल है। धन्य है ऐसे क्रान्तिकारी सपूत को और वीर जननी को।

शाहपुरा नगर में 'अन्तर्राष्ट्रीय राम-द्वारा' के पास ही नगर के 'कुण्ड-दरवाजे' के ठीक बाहर, एक बड़ा चौक है, जिसका नाम 'बारहठ-त्रिमूर्ति' चौक दिया गया है। इसमें, क्रान्तिकारी ठाकुर केसरीसिंह जी बारहठ, क्रान्ति-वीर जोरावरसिंह जी एवं अमर-शहीद कुँअर प्रताप की सुन्दर प्रतिमाएँ लगी हुई हैं। यहाँ हर वर्ष दिनांक २३ दिसम्बर को 'शहीदी-मेला' लगता है। क्योंकि इसी दिन २३ दिसम्बर सन् १९१२ को ही क्रान्तिवीर श्री जोरावरसिंह बारहठ ने दिल्ली में वाइसरॉय लॉर्ड हार्डिंज पर बम-प्रहार किया था।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि अमर-शहीद कुँवर प्रताप ने अपनी मात्र बीस वर्ष की स्वल्प जीवन-अवधि में, वह महान कार्य सम्पन्न करके दिखा दिया, जो साधारणतया कोई व्यक्ति, सौ वर्ष की लम्बी जिन्दगी में भी नहीं कर सकता। ऐसे वीर-पुरुष तो किसी समाज में शताब्दियों में यदा-कदा ही पैदा होते हैं। राजस्थान ही नहीं, सम्पूर्ण भारतवर्ष को ऐसे क्रान्तिकारी नर-रत्न पर गर्व है। इसी सन्दर्भ में प्रो. नाथूराम जी खड़गावत, 'राजस्थान कॉलेज', जयपुर कहा करते थे कि अमर शहीद कुँ. प्रताप के जीवन में कहीं भी 'अगर-मगर' का कोई स्थान नहीं था। स्मरण रहे कि राजस्थान सरकार द्वारा प्रो. खड़गावत को '' Role of Rajasthan in the freedom struggle of India'' का इतिहास लिखने का कार्य दिया गया था।

कुँवर प्रताप ने, मात्र बीस वर्ष की अल्पायु में यानी २४ मई, सन् १८९३ को उदयपुर में जन्म और २४ मई, १९१३ को बरेली सैन्ट्रल जेल के काल-कोठरी में अमानुषिक यातनाएँ सहते-सहते पर-लोक गमन कर, देश की स्वतन्त्रता के लिए एक प्रचण्ड मशाल के समान जल कर, अपने आपको कुर्बान कर दिया। वास्तव में प्रताप 'क्रान्तिकारी-युग' का अभिमन्यु ही था, जिसने अंग्रेज-शासकों के चक्रव्यूह का भेदन किया था। आओ, ऐसे महावीर अमर शहीद कुँअर प्रताप की ''जय बोलो-जय बोलो''

'मातृ-कृपा' १३, शास्त्री नगर, अजमेर-३०५००६ (राज.)

चलभाष-०९३१४४६७७९०

आर्यसमाज का प्रथम नियम कितना समीचीन?

- मणीन्द्र कुमार व्यास

पिछले अंक का शेष भाग.....

समाधान एवं समीक्षा

- आचार्य सत्यजित्

श्री मणीन्द्र कुमार व्यास- आक्षेप २- ''नियम में दो बार विद्या का प्रयोग पुनरुक्ति दोष है। 'सब सत्य विद्या' में विद्या शब्द का जब प्रयोग हो ही गया तो फिर से 'जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं' यह कथन कहने की क्या आवश्यकता? एक बार 'सत्यविद्या' में कहा फिर से विद्या कहा तो एक ही वाक्य में पुनरुक्ति दोष सिद्ध होता है।''

समाधान एवं समीक्षा-२- एक ही वाक्य में दो बार 'विद्या' शब्द का प्रयोग पुनरुक्ति दोष है, यह आक्षेप ठीक नहीं है। **प्रथम** तो यह एक वाक्य नहीं है, ये दो वाक्य हैं। **(क)** सब सत्य विद्याओं का आदि मूल परमेश्वर है। **(ख)** जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उनका आदि मूल परमेश्वर है। इन दो वाक्यों को मिला कर प्रथम नियम बनाया गया है। चूंकि यहाँ दो बातें कही गई हैं, अत: ये दो वाक्य हैं।

मीमांसा दर्शन - जो कि वाक्यशास्त्र है - में वाक्य का लक्षण किया गया **''अर्थैकत्वादेकं वाक्यं साकांक्षं चेत् विभागे स्यात्''** (मी. २.१.४६) अर्थात् एक वाक्य में एक अर्थ होता है। स्पष्ट है कि प्रथम नियम में दो अर्थ (बात) होने से यह 'एक वाक्य' नहीं, दो वाक्य हैं।

दूसरा यहाँ दो बार विद्या शब्द का प्रयोग भिन्न-भिन्न रूप में किया गया है, समान रूप में नहीं, इसलिए भी पुनरुक्ति नहीं। प्रथम प्रयोग 'सब सत्य विद्या' में विद्या शब्द विशेष्य है, जबकि द्वितीय प्रयोग 'जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं' में विद्या शब्द विशेषण है। 'पदार्थ' विशेष्य को विशेषित करने के लिए 'विद्या' शब्द का पुन: प्रयोग किया गया है। यह पुन: प्रयोग सार्थक होने से पुनरुक्ति दोष नहीं कहला सकता, यह अनुवाद है। सार्थक पुन: कथन को 'अनुवाद' कहते हैं व निरर्थक पुन: कथन को 'पुनरुक्ति दोष' कहते हैं। देखें न्यायदर्शन वात्स्यायन भाष्य २.१.६१- **अनर्थकोऽभ्यास: पुनरुक्तम्, अर्थवानभ्यासोऽनुवाद:।**

प्रथम वाक्य में विशेषण युक्त जिस विद्या का ग्रहण किया गया, उसी विद्या का दूसरे वाक्य में विशेषण रहित ग्रहण किया गया है, किन्तु अर्थ की दृष्टि से विशेषणों से युक्त विद्या का ही यहाँ दूसरी बार भी ग्रहण होगा। यदि महर्षि दूसरी बार भी 'विद्या' शब्द को उसके विशेषणों के साथ प्रयोग करते तो पुनरुक्ति युक्त अटपटा प्रयोग होता- 'जो पदार्थ **सब सत्य** विद्या से जाने जाते हैं'।

दूसरी बार 'विद्या' शब्द के प्रयोग की सार्थकता एक और दृष्टि से देखी जा सकती है। श्री मणीन्द्र कुमार व्यास के अनुसार 'विद्या' शब्द रहित उचित वाक्य यह होना चाहिए था- 'जो पदार्थ जाने जाते हैं'। यहाँ स्मरण रखना चाहिए कि जानना तो मिथ्याज्ञान से भी होता है, जैसे कि मृगमरीचिका में 'जल' का ज्ञान मिथ्या है, भूत-प्रेत (लोक प्रचलित) का ज्ञान मिथ्या है, गंगा में डुबकी लगाने से पाप धुल जाते हैं यह ज्ञान मिथ्या है, यह सत्यविद्या नहीं है। इस मिथ्या ज्ञान से जिन पदार्थों का ज्ञान होता है, उनका आदि मूल परमेश्वर नहीं माना जा सकता। इससे स्पष्ट होता है कि जो पदार्थ मिथ्याज्ञान से जाने जाते हैं उनका आदिमूल परमेश्वर नहीं होता, मात्र सत्य ज्ञान (सत्य विद्या) से जो पदार्थ जाने जाते हैं, उन्हीं का आदि मूल परमेश्वर होता है। इसलिए 'विद्या' शब्द का विशेषण रूप में पुन: कथन सार्थक होने से उचित है।

श्री मणीन्द्र कुमार व्यास- आक्षेप ३- ''पदार्थ शब्द भी यहाँ समीचीन नहीं है। क्योंकि वैशेषिक दर्शन के अनुसार परमेश्वर भी एक पदार्थ है। पदार्थ अर्थात् परमेश्वर और परमेश्वर का मूल पदार्थ कैसे हो सकता है। तब तो यह हुआ कि परमेश्वर का मूल परमेश्वर है क्योंकि षड् पदार्थों में परमेश्वर भी एक द्रव्य रूप पदार्थ है। अत: यहाँ कहा गया वाक्य 'जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदिमूल परमेश्वर है' नितान्त भ्रामक, विरोधाभासी, अस्पष्ट तथा अतिव्याप्ति दोषयुक्त है।''

समाधान एवं समीक्षा-३- यह स्वीकृत सिद्धान्त है कि परमेश्वर भी एक पदार्थ है। परमेश्वर भी विद्या से जाना जाने वाला एक पदार्थ है। अत: इतने अंश में कोई दोष नहीं है और आक्षेप इस अंश पर है भी नहीं। आक्षेप है- 'परमेश्वर का मूल पदार्थ कैसे हो सकता है?' यहाँ इस आक्षेप में कहे गये अंश पर आक्षेप उठता है कि प्रथम नियम में 'मूल पदार्थ' यह शब्द तो कहा ही नहीं गया है। तो फिर निराधार आक्षेप क्यों? स्मरण रहे कि प्रथम नियम में 'आदि मूल' शब्द है न कि 'मूल पदार्थ'। आक्षेपकर्त्ता यहाँ 'आदि मूल' का अर्थ 'मूल पदार्थ' और उस का अर्थ 'उपादान-कारण' मान कर चल रहे हैं, अत: उनके द्वारा

भ्रान्ति से आक्षेप करना स्वाभाविक है। परमात्मा का कोई उपादान कारण (मूल पदार्थ) नहीं होता, नहीं हो सकता क्योंकि वह नित्य, निरवयव द्रव्य है, यह स्वीकृत सिद्धान्त है। आक्षेप तब उठ सकता है जब 'आदि मूल' से मूल पदार्थ/उपादान कारण का ग्रहण किया जाये। किन्तु प्रथम नियम में 'आदि मूल' का यह अर्थ ग्रहण ही नहीं किया जा सकता। शब्दों या वाक्यों का अर्थ वक्ता के अभिप्राय के अनुकूल ही ग्रहण किया जाना उचित होता है, न्याय्य होता है। वक्ता के अभिप्राय से भिन्न/विपरीत अर्थ का ग्रहण करना अनुचित होता है, अन्याय होता है, पूर्वाग्रह होता है।

'आदि मूल' शब्द का अर्थ 'मूल पदार्थ' या 'उपादान कारण' लेना भले ही कहीं उचित हो, किन्तु यहाँ अनुचित हैं। 'आदि मूल' का अर्थ यह भी होता है- **आदि**= प्रथम, प्राथमिक, आदिम, मुख्य, प्रधान; **मूल**= आधार, आश्रय, प्रतिष्ठा। इस प्रकार मुख्य/प्रथम आधार/आश्रय को भी 'आदि मूल' कहते हैं। यही अर्थ वक्ता महर्षि दयानन्द के अभिप्राय के अनुकूल होने से यहाँ ग्राह्य है। महर्षि दयानन्द परमेश्वर को सर्वत्र नित्य, निरवयव, अनादि, अनन्त, अजन्मा, अमर ही स्वीकार करते हैं। उन्होंने कहीं भी परमेश्वर को कार्य नहीं लिखा, उसके कारणों को भी नहीं लिखा, अत: महर्षि यहाँ मूल पदार्थ/उपादान कारण अर्थ को बताने के लिए 'आदि मूल' शब्द का प्रयोग कैसे कर सकते हैं? कभी नहीं कर सकते। इसी कारण आर्यसमाज व आर्य विद्वान् अब तक प्रथम नियम को ठीक मानते आये हैं। यह उनका दुराग्रह नहीं है, यह उनकी वक्ता के अभिप्राय को ही ग्रहण करने की न्यायप्रियता है, सत्य को ग्रहण करना है। हाँ, जो भाषा के नियमों को नहीं जानते-समझते, जो अपने अर्थ को वक्ता पर थोप देते हैं, जो पूर्वाग्रह या दुराग्रह से युक्त हैं, जो वक्ता के अभिप्राय को नहीं समझ पाये हैं, जो वक्ता के साथ न्याय नहीं करना चाहते, वे प्रथम नियम को गलत-दोष युक्त मान लेते हैं, उनके लिए यही स्वाभाविक है, उन्हें नियम में दोष ही दिखेगा। लेकिन यह द्रष्टा का दोष है, न कि प्रथम नियम का।

महर्षि का अभिप्राय है कि सब सत्य विद्या और विद्या से ज्ञेय सब पदार्थों का आदिमूल (प्रथम/मुख्य आधार/आश्रय) परमेश्वर है। यहाँ किसी भी 'कारण' उपादान, निमित्त, साधारण या समवायी, असमवायी, निमित्त का कथन अभिप्रेत नहीं है। यदि यहाँ किसी भी 'कारण' को कहना अभिप्रेत मानेंगे तो दोष-आक्षेप-प्रश्न बने ही रहेंगे, उनका कोई उचित-स्वीकार्य समाधान नहीं हो सकेगा, अतिव्याप्ति आदि दोष दिखते रहेंगे।

'आदि मूल' शब्द का अर्थ 'मुख्य आधार' ग्रहण करने पर भी आक्षेप-प्रश्न तो उठेंगे, किन्तु उनका उचित-संगतियुक्त समाधान हो जाता है। अब संगति देखिए कि परमेश्वर सब पदार्थों का आदि मूल कैसे है? समस्त **कार्यजगत्** बिना परमेश्वर के बन नहीं सकता, रक्षित नहीं हो सकता अत: परमात्मा इनका मूल है आधार/आश्रय है।

जगत् के कुछ पदार्थ परस्पर भी आश्रय-आधार होते हैं यथा पृथिवी का आधार सूर्य, प्राणियों का आधार जल-वायु आदि, जगत् का उपादान-कारण मूल प्रकृति (सत्व-रज-तम) भी जगत् का आधार/आश्रय/मूल है। इन अन्य आधारों-आश्रयों में भी प्रथम/मुख्य आधार परमेश्वर है। परमेश्वर इन आधारों-आश्रयों का भी आधार/आश्रय है, इसलिए भी वह प्रथम/मुख्य आधार/आश्रय है, आदि मूल है। 'आदिमूल' मात्र परमेश्वर है, अन्य पदार्थ 'मूल' हो सकते हैं पर 'आदिमूल' कभी नहीं हो सकते। ये तो बात हुई कार्यजगत् की। अब प्रश्न शेष है- अनादि-नित्य आत्मा, प्रकृति व स्वयं परमेश्वर का आदिमूल परमेश्वर कैसे है? एक-एक करके देखते हैं।

यद्यपि **आत्मा** नित्य है, उसका कोई उपादान-निमित्त-साधारण या समवायी, असमवायी, निमित्त कारण नहीं है, फिर भी चूंकि वह अल्पज्ञ अल्पशक्तिमान् है और परमेश्वर द्वारा प्रदत्त शरीरादि साधनों के बिना कुछ भी नहीं कर सकता, इसलिए उसका भी मूल-आधार/आश्रय परमेश्वर ही है। प्रकृति व कार्यजगत् भी आत्मा का मूल=आधार/आश्रय बनते हैं, किन्तु इन सबके पीछे भी, इन सबको आधार/आश्रय देने वाला, परमेश्वर ही है, अत: परमेश्वर आत्मा का भी 'आदिमूल' है प्रथम/मुख्य आधार/आश्रय है।

मूल प्रकृति भी नित्य है, उसका भी कोई कारण नहीं होता, फिर भी वह जड़ होने से स्वयं कार्य रूप में नहीं आ सकती, स्वयं अपने गुणों को प्रकट नहीं कर सकती, आत्मा के लिए स्वयं उपयोगी नहीं हो सकती। मूल प्रकृति को उपयोगी रूप में सार्थक रूप में लाने वाला परमेश्वर है, अत: वह इसका मूल=आधार/आश्रय है। सृष्टि के प्रारम्भ में परमात्मा के ईक्षण-प्रेरण-प्रयत्न से ही वह कार्य रूप में परिणत होना आरम्भ करती है, इसलिए मूल प्रकृति का भी आधार/आश्रय परमेश्वर है, वही इसका भी आदि मूल है।

अब बचा स्वयं **परमेश्वर**। परमेश्वर भी नित्य आदि गुणों वाला होने से बिना कारण वाला है। आत्मा व प्रकृति

और कार्यजगत् भी परमेश्वर के आश्रय/आधार नहीं होते, नहीं हो सकते। परमात्मा का आधार/आश्रय कोई नहीं है, कोई नहीं हो सकता, वह तो स्वयम्भू है, वह तो अपना आश्रय-आधार स्वयं है। परमेश्वर का अन्य कोई आश्रय-आधार नहीं है, यह बताने के लिए कहा जा सकता है कि 'परमेश्वर का आदि मूल परमेश्वर है'। ऐसा कहने में कोई दोष नहीं, किसी सिद्धान्त की हानि नहीं, कोई आक्षेप नहीं हो सकता।

सब सत्य विद्याओं का आदि मूल तो ईश्वर है ही, अन्य प्राणि-मनुष्य भी सत्यविद्या के मूल-आधार-आश्रय हैं, किन्तु **सब** के नहीं तथा **आदि** भी नहीं। इन सब का व इनकी सत्य विद्या का साक्षात् या परोक्ष रूप से मूल=आधार/आश्रय परमात्मा है, वही प्रथम-प्रधान-मुख्य आधार है, अत: सब सत्य-विद्याओं का आदि मूल परमेश्वर है।

इस प्रकार जब हम 'आदिमूल' का अर्थ महर्षि के अभिप्राय के विपरीत न जाकर प्रथम/मुख्य/प्रधान-आश्रय/आधार करते हैं, तो कोई भ्रम नहीं होता, कोई विरोधाभास नहीं रहता, कोई अस्पष्टता नहीं रहती।

उपर्युक्त विवरण से श्री मणीन्द्र कुमार व्यास का वह आक्षेप-प्रश्न भी समाधान किया गया समझना चाहिए जिसमें उन्होंने पदार्थों का आदिमूल (मूल पदार्थ, उपादान कारण) परमेश्वर को मानने पर त्रैतवाद से विरोध दर्शाया था, क्योंकि तब तीनों अनादि पदार्थ ईश्वर, जीव, प्रकृति सादि हो जाते, अनित्य हो जाते।

श्री मणीन्द्र कुमार व्यास ने प्रथम नियम में 'पदार्थ' शब्द से वैशेषिक-दर्शन वाले पदार्थों का ग्रहण किया। प्रथम नियम में 'पदार्थ' शब्द से महर्षि वस्तु मात्र का ग्रहण चाहते हैं। वह सब, जिसे विद्या से जाना जा सकता है। यदि मात्र वैशेषिक वाले पदार्थों का ग्रहण करें, तो उनमें मूल प्रकृति नहीं गिनाई गई है, ज्ञानेन्द्रियाँ व कर्मेन्द्रियाँ भी नहीं गिनाई गई हैं। श्री मणीन्द्र कुमार व्यास स्वयं भी पदार्थ में मूल प्रकृति का ग्रहण कर ही रहे हैं, पञ्चमहाभूतों से बने दूध, घी आदि का भी ग्रहण कर रहे हैं। अत: प्रथम नियम के 'पदार्थ' शब्द को मात्र वैशेषिक-दर्शन में गिनाये गये पदार्थों तक सीमित नहीं रखना चाहिए।

अब श्री मणीन्द्र कुमार व्यास की उलझन/भ्रान्ति के कारण को देखते हैं। भ्रान्ति प्रथम नियम में स्वरूपत: नहीं है, बल्कि भ्रान्ति उनके ज्ञान/मस्तिष्क में है। देखिए उनके परस्पर विरोधी/भिन्न-भिन्न कथन, जो उन्होंने 'आदिमूल' शब्द को समझाते-बताते हुए भिन्न-भिन्न स्थानों पर लिखे हैं-

(क) ''आदि मूल अर्थात् जो **प्रारम्भिक कारण** हो या जो कार्य का **कारण** हो। परमेश्वर भी आदिमूल है अर्थात् परमेश्वर इस सृष्टि को रचने में **निमित्त कारण** के रूप में इस कार्य रूप जड़ जगत् का नैमित्तिक उत्पादक, नियन्ता एवं संहारक भी है।''

(ख) ''कार्य रूप दृश्य जगत् का **मूल कारण** प्रकृति है। ..... प्रत्येक **कारण अर्थात् मूल** का कोई न कोई कार्य होता ही है....''।

(ग) ''**समवायि कारण**- यह अपृथक् भाव से समवायि रूप से विद्यमान रहने वाला **मूल कारण** होता है।''।

(घ) ''इसलिए परमेश्वर **निमित्त कारण** या **मूल कारण** है। उसी को ही **अनादि कारण** कहा है।''।

(ङ) ''इस कार्य जगत् में जितने भी दृश्य या अदृश्य भाव हैं उनके **कारण** पर जाते रहिये तो **मूल कारण** का अनुभव होता जाएगा।.... अर्थात् आहार पृथ्वी तत्त्व से, पृथ्वी जल से, जल अग्नि से, अग्नि वायु से और वायु आकाश से निर्मित होता है। जो कि **पूर्वापर** मूल कारण हैं। अब आकाश का मूल कारण.... अर्थात् आकाश का **मूल कारण** परमेश्वर है''।

इन वाक्यों में वे 'आदि मूल' के निम्नलिखित अर्थ करते हैं- 'प्रारम्भिक कारण', 'कारण', 'निमित्त कारण'। 'मूल कारण' शब्द का प्रयोग वे 'समवायिकारण' के लिए भी कर रहे हैं व 'निमित्त कारण' के लिए भी। जल, अग्नि, वायु, आकाश को भी 'मूल कारण' कह रहे हैं व प्रकृति को भी। आकाश का मूल कारण परमेश्वर को भी मान रहे हैं। जब ये 'मूल' का अर्थ 'कारण' कर रहे हैं, तो फिर 'मूल कारण' यह पुनरुक्ति युक्त पद संयोजन भी कैसे बना रहे हैं? यह सब अस्पष्टता व भ्रान्ति युक्त वचन हैं। विषय को स्पष्टता से समझे बिना ही लिखना, पूर्वापर लेख की संगति-विरोध को न पकड़ पाना प्रबुद्धता की हानि का सूचक नहीं है क्या? क्या ऐसी प्रबुद्धता के आधार पर आर्यसमाज में प्रबुद्धता की हानि का आक्षेप लगाना दुस्साहस नहीं है?

कुछ अन्य उदाहरण देखिए- पदार्थ के तीन लक्षण बताते हुए जिस संस्कृत वाक्य का प्रयोग किया है, उसे वैशेषिक दर्शन एवं महर्षि कणाद का भी मान कर लिख दिया। वस्तुत: यह मात्र प्रशस्तपाद भाष्य का वचन है। यह वचन वास्तव में पदार्थ का लक्षण बताने के लिए नहीं है, यह तो छहों पदार्थों में परस्पर तीन साधर्म्य बताने के लिए है। इन तीन समान धर्मों में तीसरा है- 'ज्ञेयत्व',

इसका वास्तविक अर्थ है **जानने योग्य/जिसे जाना जा सकता है** वह। 'ज्ञेयत्व' का तीन बार अर्थ करते हुए श्री मणीन्द्र कुमार व्यास तीनों बार अनर्थ कर देते हैं, देखिए **(क) जिनके द्वारा** हमें ज्ञान प्राप्त होता है, **(ख) जिससे** कुछ ज्ञान प्राप्त किया जा सकता हो, **(ग) जिससे** ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। अन्यों के कथन में बिना समझे दोष का आरोप देने वाले प्रबुद्ध सज्जन अपने कथनों में दोष को नहीं देख/समझ पा रहे हैं।

असमवायि कारण को भी भिन्न रूप में प्रस्तुत किया है। घट के निर्माण में पानी, दण्ड, चक्र के संयोग को ये असमवायि कारण मान बैठे हैं, ''दण्ड, चक्र आदि का संयोग असमवायि कारण हुआ''। इस भ्रान्ति का कारण यह प्रतीत होता है कि उन्होंने कारण के भिन्न दृष्टि से किये ३-३ भेदों को नासमझी से समान मान कर मिला दिया है। महर्षि दयानन्द ने उपादान, निमित्त व साधारण कारण का उल्लेख किया। वैशेषिक दर्शन में समवायि, असमवायि व निमित्त कारण इस प्रकार वर्णन है। इन्होंने साधारण व असमवायि को एक समझ लिया व उन्हें मिला कर हाईब्रीड लक्षण दे दिया। दण्ड, चक्र आदि साधारण कारण कहे गये व संयोग को असमवायि कारण कहा गया, तो इन्होंने प्रबुद्धता से दण्ड-चक्र आदि के संयोग को असमवायि कारण समझ लिया। वास्तविकता यह है कि सत्यार्थ प्रकाश के साधारण व निमित्त कारण दोनों का अन्तर्भाव वैशेषिक के निमित्त कारण में होता है। वैशेषिक में जिस संयोग को असमवायि कारण माना है वह कार्य द्रव्य के कारण अवयवों (उपादान कणों) का संयोग है, न कि दण्ड, चक्र आदि का संयोग।

इनकी असमवायि कारण की परिभाषा अतिव्याप्ति दोष से युक्त है। ये लिखते हैं- ''जो समवायि कारण से भिन्न हो किन्तु किसी कार्य की पूर्णता में वह आवश्यक हो''। यह लक्षण तो कर्त्ता में भी घट जाता है, जिसे ये निमित्त कारण मानते हैं, न कि असमवायि कारण।

प्रथम नियम की शब्द संरचना में व्याकरण, दर्शन, सिद्धान्त तथा व्यावहारिक रूप से त्रुटियाँ मानने वाले श्री मणीन्द्रकुमार व्यास समाधान की आशा में ऊहा करते हैं कि प्रथम नियम का हिन्दी अनुवाद करने में त्रुटि हो गई होगी। इस त्रुटि को बताने के लिए वे संस्कृत में प्रथम नियम लिखते हैं- ''**याः सत्यविद्याः विहिताः पदार्थाः तेषां सर्वेषां प्रभुरादिमूलम्**''।

यह संस्कृत वाक्य उन्होंने कहाँ से प्राप्त किया? इसका आधार क्या है? या यह इनकी स्वयं की प्रबुद्धता जन्य है? यह संस्कृत वाक्य स्वयं अस्पष्ट है, त्रुटियुक्त है। कृपया इसका शुद्ध हिन्दी अनुवाद वे कर पायें तो १३८ वर्षों से चली आ रही मिथ्या परम्परा को ठीक किया जा सके।

यदि जैसे-तैसे वे स्वानुकूल अर्थ कर भी दें तो भी उनके उठाये त्रैतवाद वाले आक्षेप व परमेश्वर का मूल परमेश्वर वाले आक्षेप का समाधान नहीं हो पायेगा, ये दोष तो इन के किये अर्थ में भी रहेंगे। क्योंकि पदार्थ में परमेश्वर, जीव, प्रकृति तीनों अनादि नित्य द्रव्यों का ग्रहण हो ही जायेगा, फिर इनका कोई आदि मूल (इनके अनुसार उपादान कारण, मूल पदार्थ) कैसे हो सकता है? यदि होगा तो ये तीन नित्य नहीं कहला सकते। 'प्रभु' का अर्थ परमेश्वर ही करना होगा, तब परमेश्वर का मूल पदार्थ परमेश्वर कैसे होगा? परमेश्वर का मूल (उपादान) परमेश्वर को मानना होगा। प्रथम नियम के उद्धृत संस्कृत वाक्य से वे सब प्रश्नों/आक्षेपों का समाधान कैसे कर पायेंगे? उनकी प्रबुद्धता की थाह अवगत नहीं हो पाई।

उपर्युक्त समाधान व समीक्षा से यह ज्ञात होता है कि प्रथम नियम पर किये गये आक्षेप/प्रश्न निराधार हैं, अनुचित हैं। अतः इनसे महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज, आर्य विद्वानों व आर्यजनों पर अप्रबुद्धता, दुराग्रह आदि के आरोप लगाना ठीक नहीं है। हाँ, नियम की व्याख्या तो हमें करनी ही होगी, तभी ठीक अर्थ स्पष्ट हो पायेगा। सूत्रात्मक संक्षिप्त व संस्कृतनिष्ठ शैली होने के कारण तथा इतने पुराने समय की भाषा होने के कारण हमारे लिए कुछ अस्पष्टता मानी जा सकती है। इस अस्पष्टता को स्वीकारते हुए भी यह सम्मति नहीं दी जा सकती कि इस की भाषा में संशोधन कर देना चाहिए। यह ऐतिहासिक वाक्य बन चुका है, इसे यथावत् रखना ही श्रेयस्कर है। विशेषकर तब जबकि इस नियम के अब तक यथावत् बने रहने पर भी इससे आर्यसमाज या आर्य विद्वानों ने किसी सिद्धान्त विरुद्ध बात को नहीं निकाला, किसी वेद विरुद्ध बात को सिद्ध करने का प्रयास नहीं किया। त्रैतवाद के सिद्धान्त के अनुरूप ही इसका अर्थ समझते रहे हैं, बिलकुल वही अर्थ जैसा कि श्री मणीन्द्र कुमार व्यास वाक्य बदल कर समझाना चाह रहे हैं। तात्पर्य की दृष्टि से श्री मणीन्द्र कुमार व्यास व आर्यसमाज, आर्यविद्वानों में कहाँ भिन्नता है? मात्र शब्द रचना को भाषा को ठीक समझने की आवश्यकता है।

इस समाधान-समीक्षा पर पाठकों को यदि कुछ शंका हो, त्रुटि दिखे तो उससे अवगत कराने की कृपा करेंगे, ऐसी आशा है।

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ जून २०१४ तक)

१. श्री वरुणदेव वैद्यराज, सोनीपत २. आई.जी.एम. टेक्नोलाजी, जयपुर ३. श्री विरदीचन्द गुप्ता, जयपुर ४. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर ५. श्री रंजन हांडा, पीतमपुरा, दिल्ली ६. श्री स्वास्तिकाम: चेरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महाराष्ट्र ७. डॉ. बलवन्तसिंह आर्य, बीकानेर ८. श्री परमानन्द पटेल, सोनभद्र, उ.प्र. ९. जेनिथ इन्टरप्राइजेज, पालम, नई दिल्ली १०. श्री विजयकुमार तोषनीवाल, कोटा ११. श्री पुनित ग्रोवर, दिल्ली १२. श्रीमती निर्मला जोशी, अजमेर १३. श्री पंकज कुमार गर्ग, कोलकाता १४. श्री पदमकुमार गर्ग, बैंगलूर १५. श्री रामदयाल गौतम, बान्दीकुई, राज. १६. श्री ओमप्रकाश चौधरी, सवाई माधोपुर, राज. १७. श्री अक्षय गुप्ता, जयपुर १८. श्री जितेन्द्र उपाध्याय, दिल्ली १९. दृष्टि मन्त्री, अजमेर २०. आर्यसमाज विजयनगर, राज. २१. श्री प्रभुलाल कुमावत, किशनगढ़, राज. २२. महर्षि दयानन्द उ.मा. विद्यालय फतहनगर, उदयपुर, राज. २३. आर्य योग संस्थान मंझाल गनव, महा. २४. श्री विवेक तापड़िया, कोटा २५. श्री गणपतलाल तापड़िया, कोटा २६. प्रधान आर्यसमाज कुचेरा, नागौर, राज. २७. नगर आर्यसमाज बीकानेर २८. महिला समिति बीकानेर २९. श्री रवि प्रकाश मन्त्री, गंगानगर, राज. ३०. मन्त्री आर्यसमाज श्रीगंगानगर ३१. श्री हरफूलसिंह सरपंच, श्रीगंगानगर।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों को नि:शुल्क दिया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ जून २०१४ तक)

१. श्री पदमचन्द शोभित कुमार सुराणा, अजमेर २. श्री आई.जी.एम. टेक्नोलाजी, जयपुर ३. श्री राधेश्याम माहेश्वरी, अजमेर ४. श्री विरदीचन्द गुप्ता, जयपुर ५. श्रीमती शान्ती स्वरूप टिकवाल, जयपुर ६. श्री नन्दलाल चांवला, बिलासपुर, छ.ग. ७. श्री अतुल कुमार, अलवर ८. श्रीमती शकुन्तला पंचारिया, पीसांगन, राज. ९. श्रीमती मंजू शर्मा, अजमेर १०. श्री राजेश कुमार कुर्मी, माधोपुर, राज. ११. श्री नवीन मिश्र, अजमेर १२. श्री हेमचन्द सोनगरा, अजमेर १३. श्रीमती निर्मला जोशी, अजमेर १४. श्रीमती अंशु मिश्रा, अजमेर १५. श्रीमती चित्रा आर्या, अजमेर १६. श्री मनीष सोनी, जयपुर १७. श्रीमती ज्योतिका जयशुक्ला, अहमदाबाद १८. श्री नकुल आर्य, अजमेर १९. श्री गणपतलाल तापड़िया, कोटा, राज. २०. श्री दीनानाथ आर्य, गोरखपुर, उ.प्र. २१. श्रीमती सावित्री मन्त्री, अजमेर २२. आर्यसमाज विजयनगर, राज. २३. श्री अनिल शर्मा, अजमेर २४. डॉ. कुलदीपचन्द गोयल, म.प्र. २५. पं. रामदेव शर्मा, राज. २६. श्रीमती स्वाति अभिषेक, बैंगलूर, कर्नाटक २७. श्री राजेश त्यागी, अजमेर।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

वेदगोष्ठी का आयोजन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष पर २७वीं वेदगोष्ठी का आयोजन ऋषि मेले के साथ ही दीपावली के पश्चात् ३१ अक्टूबर तथा १, २ नवम्बर २०१४, शुक्र, शनि, रविवार को किया गया है। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विषय 'भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद' रखा गया है। इससे पूर्व वर्ष में कुछ विचार ग्यारहवें समुल्लास के सम्बन्ध में विचार किया गया था। इस वर्ष की गोष्ठी में ऋषि दयानन्द के पश्चात् प्रचलित मत सम्प्रदायों के सिद्धान्त और उद्देश्यों पर विशेष चर्चा होगी। किन विशेष सम्प्रदायों को विचार के लिए लिया जायेगा, इसकी सूचना आगे के अङ्क में दी जा सकेगी।

श्रेष्ठ निबन्ध के लिए प्रथम ६१००, द्वितीय ४१००, तृतीय पुरस्कार ३१०० रुपये रखे गये हैं। गत वर्ष के श्रेष्ठ निबन्धों को आगामी ऋषि मेले के अवसर पर पुरस्कृत किया जायेगा।

- संयोजक

क्या आर्य अन्य देशों से विस्थापित होकर आये?

- मोहनलाल तँवर

अपने घृणित साम्राज्यवादी तरंग में १८ वीं शताब्दी में पश्चिमी इतिहासकार मनघडन्त बातें पराधीन राष्ट्रों के गले उतारने में रत हो गये। इन विदेशी इतिहासकारों की जाति काल्पनिक-तथाकथित आर्य जाति की एक के बाद एक परिभाषा करने, उनकी भाषाओं को जानने उनके मूल देश का पता लगाने को लेकर माथापच्ची करने में लगी हुई है। इस भागदौड़ का परिणाम कुछ नहीं निकला केवल मृगतृष्णा के रूप में उनका कार्य निष्फल रहा। आर्य शब्द जाति के रूप में कभी रहा भी नहीं। अत: उनका एशिया और यूरोप में फैल जाना उपहास के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

संस्कृत के भारतीय विद्वानों ने आर्य शब्द की रचना आदर्श के द्योतक के रूप में की थी, जिसका अर्थ, सुसंस्कृतजन, पूर्णकुलीन व्यक्ति आदर्श मानव का द्योतक था। यह आर्य शब्द विकास की उस स्थिति में पहुँचने का विशेषण है जिसकी अभिलाषा प्रत्येक व्यक्ति को करनी चाहिए। इसीलिए प्रत्येक भारतीय का आदर्श वाक्य **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** अर्थात् सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाओ। यदि 'आर्य' शब्द जाति का द्योतक होता तो यह आदर्शवाक्य प्रयोग में नहीं आता न व्यवहार में आता। यह शब्द आदर्श व्यक्ति का द्योतक था किसी जाति का नहीं। कृष्ण अर्जुन को कहते हैं:-

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्,
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन।

कृष्ण जैसे महापुरुष न तो अपने को एक जाति में बान्ध सकते थे और न अन्यों को हीन भावना से देख सकते थे।

प्राचीन भारत में पति अथवा राजा को सम्बोधन में आर्य शब्द का प्रयोग किया जाता था। दोनों के लिए यह श्रेष्ठ व्यक्ति का प्रतीक था। आर्यों को एक जाति समझना और उनके द्वारा दासों व 'दस्युओं' का निर्दयता पूर्ण दमन करना, इस भूल ने विश्व इतिहास को भ्रष्ट कर दिया है।

'संस्कृत भाषा' शीर्षक नाम वाली अपनी पुस्तक में प्रोफेसर टी.मुरो ने लिखा है कि ''भारत पर इंडो-आर्यन् आक्रमण का प्रत्यक्ष प्रमाण कहीं उपलब्ध नहीं है। ऋग्वेद में यद्यपि इतिहास नहीं है, फिर भी ऐसा कोई संदर्भ नहीं मिलता जिससे ज्ञात हो सके कि आर्यों का देशान्तर गमन हुआ था'' इस बात से सिद्ध होता है कि भारतीय लोग मध्य एशिया और ध्रुव प्रदेशीय व्यक्तियों का एकीकरण नहीं है। विदेशियों की तोता रटंत कि हम लोग दूसरे देश के हैं तथा भारत के लोग अर्थात् मूल निवासी आदिवासी थे, इन्होंने भारत पर आक्रमण किया और मूल निवासियों का वंश मिटा दिया और इस महाविध्वंस में जो शेष रहे वे आर्य जीवन में समा गये। इतिहासकारों की इस घृणित धारणा को मिटाना होगा।

भारतीयों के विभिन्न रूप रंग हैं। श्वेत वर्णियों को आर्य सिद्ध करना एवं अश्वतों को अनार्य, यह इतिहासकारों की भूल है यह आर्य शब्द सम्मान सूचक है जो प्रत्येक वर्ण व मानव के रंग रूप के अनुसार नहीं है। यह सुसंस्कृत एवं सज्जन व्यक्ति के लिए संबोधन है। यह संस्कृत शब्द एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को आदर के रूप में व्यक्त किया जाता था जिसका पश्चिमी विद्वानों व मैक्समूलर ने जाति का अर्थ लगा लिया।

विदेशी विद्वानों का तर्क है कि बाली से बाल्टिक सागर तथा कोरिया से काबा तक संस्कृत भाषी थे। फिर यह भी तर्क दिया कि इनकी भाषा संस्कृत न होकर संस्कृत की मिली जूली लिथूआनियन भाषा थी और इस भाषा का नाम इन विदेशी इतिहासकारों ने यूरोपीय भाषा जैसा काल्पनिक नाम रख दिया और उन्होंने बाल्टिक सागर से अन्य देशों में गमन किया और यही एक कमजोर आधार है जिससे इन लोगों ने आर्यों का भारत में प्रवेश मान लिया। इसके विपरीत तथ्य यह है कि भारत के साहसी व्यक्ति ही अन्य महाद्वीपों में गये परन्तु शताब्दियाँ व्यतीत होने के उपरान्त वे संस्कृत भाषा विस्मृत कर गये तथा संस्कृत भाषा के चिन्ह ही बनाए रखे वास्तविक संस्कृत भाषा तो अपने उद्गम स्थान भारत वर्ष में ही फल-फूल रही थी। वैदिक भारतीयों का उद्घोष वाक्य ''**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**'' प्रसारित करने हेतु साहसिक यात्राओं पर अन्य द्वीपों पर गमन करते रहे।

आर्य लोग प्रारम्भ से ही अपने देश से प्यार करने वाले रहे हैं। धृतराष्ट्र ने जब संजय से प्रश्न किया-''युद्ध में भाग लेने वाली सेनायें कहाँ-कहाँ से आई।'' उत्तर में संजय ने कहा हे भारत! अब मैं आर्यवृत्त का वर्णन करता

हूँ। यहदेश देव-इन्द्र का प्रिय देश था। यही देश इन्द्र के भ्राता विवस्वान् के पुत्र मनु का प्यारा देश था। यही देश राजा पृथुवैन्य, महात्मा इक्ष्वानु, ययाति, अम्बरीष, मान्धाता, नहुष, उशीवर और शिबि आदि का भी यही प्यारा देश था। आर्य लोग आरम्भ से ही अपने देश से प्यार करते आ रहे हैं और वे इसी देश के वासी थे।

अत: विदेशी लेखकों का मत ''कि आर्य बाहर से आये थे'' यहीं खारिज हो जाता है। मुनि कात्यायन जो कि विक्रम से २५००० वर्ष पूर्व हुए थे, अपने याजुष ग्रन्थ प्रतिज्ञा परिशिष्ट में लिखते हैं कि ब्राह्मण का मूल-स्थान भारत का मध्य प्रदेश है। दूसरा प्रमाण, यवन राजदूत मैगस्थ-नेज जो विक्रम से २५०वर्ष पूर्व हुआ, लिखता है- ''भारत अनगिनत और विभिन्न जातियों से बसा हुआ है। इनमें से एक भी मूल में विदेशीय नहीं था प्रत्युत सभी इसी देश के मूल निवासी थे।'' तीसरा भारतीय गणना के अनुसार यह भी सिद्ध होता है कि भारत पर बेक्कस अथवा डायोनिसीयस (दानवासुर) के आक्रमण से लेकर उसके काल तक ६०४२ वर्ष एवं १५३ राजा हो चुके हैं। चौथा, भारत के अनेक नगरों ग्रामों और देशों के नाम पुराने आर्य महापुरुषों और राजाओं में नाम पर रखे गये थे, भरत के नाम पर भारत वर्ष, ब्रह्मा के नाम पर ब्रह्मावर्त, मनु के पौत्र आनर्त के नाम पर आनर्त देश (गुजरात का एक भाग) कुशाम्ब के नाम पर कौशाम्बी (वर्तमान कासम नगरी) विदर्भ के नामपर वैदर्भदेश उशीनर के नाम पर उशीनर कोट (वर्तमान में शोरकोट) महाराजा कुरु के नाम पर कुरुक्षेत्र, महाराजा हस्तिन के नाम पर हस्तिनापुर, वत्स के नाम पर वत्सदेश, महाराजा अवन्त के नाम पर अवन्ति देश इत्यादि।

विदेशी इतिहासकारों का यह कहना कि भारत के उत्तर-पश्चिम और पूर्व देश बहुत कालपूर्व मलेच्छ हो गये थे। आबोहर, मिण्टगुमरी , हड़प्पा, गुजरात और दक्षिण के अनेक भाग मलेच्छ और शूद्र हो गये थे। आर्यलोग पश्चिम के मलेच्छ देशों से शुद्ध भाषा लेकर भारत में आये। यह बात निरर्थक और बकवास है, आर्य भारत के ही वासी थे। उनकी भाषा संसार भर में फैली हुई थी। उसी का अपभ्रंश संसार की अनेक भाषाएँ हैं। आर्यों के धर्म और तीर्थ स्थान भारत में ही है। यदि वे बाहर से आते तो अपने देशों के तीर्थ स्थान स्मरण रखते और यात्रार्थ कभी-कभी वहाँ जाया करते।

विदेशीय लोगों ने ही संस्कृत भाषा के शब्द लिए हैं जो संस्कृत का अश्व फारसी में अस्प हो गया, अश्व का पर्याय क्रावा लैटिन में काबालिनस, अंग्रेजी में काबालिन। हैसते क्रिया से अश्व , अंग्रेजी में हार्स और जर्मनी में हास हो गया। संस्कृत क्रमेल (ऊंट) ग्रीक में केमेलोस अंग्रेजी में कैमल, इब्रानी में जमल और अरबी में गमल होकर संस्कृत भाषा के विकृत रूप हो गये।

इन विदेशी इतिहासकारों ने वैदिक शब्दावली की व्याख्या ''आक्रमणकारी आर्यों'' और ''मूल भारतीयों के'' मध्य हुए संघर्ष के आधार पर की। अयाजवाना: (यज्ञ न करने वाले) शिश्नदेवा: (लिंगपूजक) पिशंग-भ्रष्टि (श्याम वर्णी) पर (जो मूल भारतीय थे) आर्यों ने बाहर से आकर आक्रमण किया। इन काल्पनिक जातियों पर इन इतिहासकारों ने अपना दुराग्रह थोप दिया। वेदों में शिश्नदेव हैं जिसका अर्थ प्रबल-मनोभावों अथवा संवेदनशील अर्थ भी हैं, लिंग पूजक बिल्कुल भी नहीं अत: यह कल्पना करना कि यह शब्द आर्येतर द्रविड़ों का सूचक है अयुक्ति-युक्त एवं भाषा विज्ञान की दृष्टि से आधार हीन है। श्यामवर्ण द्रविड़ों को आर्यों ने अपमानित किया, यह भी बेकार की बातें हैं क्योंकि पिशंगभ्रष्टि शब्द लालिमा लिए भूरे रंग का है, नकि श्याम वर्ण का।

मैक्समूलर ऋग्वेद व आर्य संस्कृति को ३००० वर्ष पुराना घोषित करते हुए लिखता है कि ५००० वर्ष पुराने मोहन-जोदड़ो निवासी वैदिक सभ्यता के पूर्व हुए हैं, लेकिन मोहन-जोदड़ो में शिवफलक की उपलब्धि एवं सिन्धुघाटी की लिखावट ने मैक्स मूलर की इस धारणा को धराशायी कर दिया कि वैदिक संस्कृति से पूर्व द्रविड़ों की सभ्यता थी। ऋग्वेद सम्बन्धी इन पाश्चात्य विद्वानों की धारणा बिलकुल आधारहीन साबित हो गई।

लोकमान्य तिलक द्वारा वेदों में उत्तर-ध्रुवीय भूगोल की उपलब्धियों का यही अर्थ है कि वैदिक ऋचाओं के सृष्टा, विश्व की सभी दिशाओं में शिक्षा, विज्ञान और संस्कृत प्रचार-प्रसार के अपने आदर्श से प्रेरित होकर अपनी गवेषणात्मक साहसिकता में उत्तरी-ध्रुव की दुर्गम दूरी तक पहुँचे। इस बात का पूर्ण प्रकाश डा. अविनाशचन्द्र दास ने अपनी पुस्तक ''ऋग्वैदिक भारत'' में डाला है। इस पुस्तक के अध्ययन से यह तथ्य पूर्णतया प्रकट हो जायगा कि दस्यु लोगों की ऐसी कोई भी प्रजाति नहीं थी जो तथाकथित आर्यों से मनोवैज्ञानिक विशिष्टताओं से अलग हो। दस्यु शब्द का प्रयोग आर्येतर जातियों के रूप में नहीं हुआ, यह बात विदेशी विद्वान् कीथ और मेक्डोनल्ड ने भी

स्वीकारी है अपनी पुस्तक ''वैदिक अनुक्रमणिका'' में इन्होंने लिखा है कि ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं में दस्यु शब्द प्राकृत शत्रुओं के लिए प्रयोग में लाया गया है। लिखा है कि इन्द्र वृष्टि को देनेवाला ऐसा देवता है जो सूखा और अन्धकार को दूर भगाने के लिए जल और प्रकाश प्रदान करता है। इस जल का प्रवाह रोकने वाले मेघों और हिम के 'पुरों' को उसने नष्ट किया। इस प्रतीक को विदेशी विद्वानों ने इस रूप में लिया है कि मोहन जोदड़ो की अनार्य सभ्यता का इन्द्र ने सर्वनाश कर दिया। इन प्रतीकों को इतिहास मानना विदेशी विद्वानों की सरासर भूल है।

देश के शत्रुओं का नाम भी दस्यु था जो अतिप्राकृत प्राणी थे और भारतीय जनता से शत्रुभाव रखते थे, इस से यह सिद्ध नहीं होता कि वे यहाँ के मूल निवासी थे। ऐसे लोगों के लिए ऋग्वेद के ६/२२/१० मन्त्र में प्रार्थना है हे इन्द्र! हमें वह प्रतिभा दो जिससे दस्यु लोग भी आर्य (आदर्श, सज्जन) हो जायें तथा मानव के समस्त शत्रु नष्ट हो जावें। ऋग्वेद के (२/२०/८) मन्त्र में उल्लेख है कि ''वृत्त का संहारकर्ता इन्द्र कृष्ण योनि दस्युओं को नष्ट करता है'' तब पश्चिम विद्वान् डिम-डिम घोष करते हैं कि आक्रमणकारी आर्यों ने श्यामवर्णी आदिवासियों को विनष्ट कर दिया। आर्यों में भी श्याम वर्णी थे निषाद का पुत्र कण्व श्यामवर्णी था। वैदिक काल में भी आर्य आज के मनुष्यों के समान श्वेत, श्याम, दूधिया वर्ण के थे, अत: यह वर्णों को लेकर आर्य एवं दस्युओं में वर्गीकरण मिथ्या व आधारहीन कल्पना है। ऋग्वेद में वर्ग और वर्ग संघर्ष की कथा खोजने वाले और धर्म विद्या सम्बन्धी ग्रन्थ में इतिहास ढूढ़ने वाले व्यक्ति जो पश्चिमी विद्वान् हैं, घोर अनर्थ किया है।

आर्यों को जाति में बान्धने वाले तथा उन्हें आक्रान्त बताने वाले ग्रन्थों का विरोध होना चाहिए, आर्य लोग भारत के मूल निवासी थे तथा अपने मूल निवास यथा भार-गांगेय, पंजाब, कश्मीर तथा गन्धार को छोड़कर संसार के समस्तभागों में विद्या के प्रचार-प्रसार हेतु गये थे। संसार की प्राचीनतम संस्कृति जो मूलस्त्रोत बचता है वह 'भारोपीय' न होकर केवल भारतीय सभ्यता एवं भारतीय भाषा अर्थात् संस्कृत है।

यदि आर्यों की संज्ञा किसी जाति के लिए होती तो भारत में 'आर्य समाज' संगठन संकुचित रूप में एक जातीय वर्ग ही बना रहता जिसमें तथा कथित ''अनार्यों'' का प्रवेश पूर्णरूपेण निषिद्ध होता।

वास्तविकता तो यह है कि ''आर्य समाज'' एक विशालाधारित संगठन है, जिसके द्वार मानव मात्र के लिए खुले हुए हैं। यह तथ्य स्वयं ही सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि जाति के रूप में ''आर्य'' की कल्पना आधारहीन है। आर्य समाज के सिद्धान्त इस बात के प्रमाण हैं कि आर्य शब्द आदर्श का प्रतीक है। इस आदर्श को कार्यरूप में परिणित करने हेतु इसका प्रचार भारतीयों ने संसार भर में किया। सामान्य मानव एवं देवांश के बीच की इस अवस्था को 'आर्य' शब्द से सम्बोधित किया गया, जिसके अन्तर्गत सौहार्द, शिष्टता, शालीनता के सद्गुण समाहित होते हैं।

- ई-२०७, शास्त्री नगर, अजमेर

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक खाता संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,
जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक खाता संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.....

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१८५.	श्वसन क्रियाएं एवं प्राणायाम (सी.डी.)	
१८६.	मोटापा (सी.डी.)	४०.००
१८७.	योगनिद्रा (सी.डी.)	३०.००
१८८.	ध्यान (सी.डी.)	
१९९.	योगनिद्रा (कैसेट)	३०.००
१९०.	ध्यान (कैसेट)	३०.००

श्री रावसाहब रामविलास शारदा

१९१.	आर्य धर्मेन्द्र जीवन (सजिल्द) (स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र)	१००.००

डॉ. रामप्रकाश आर्य

१९२.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन एवं उनकी हिन्दी रचनाएं)	२५०.००

महर्षि गार्ग्य

१९३.	सामपद संहिता सजिल्द (पदपाठः)	२५.००

डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा

१९४.	वेदार्थ विमर्शः (वेदार्थ पारिजात खण्डनम्)	२५.००
१९५.	डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (बढ़िया)	५१.००
१९६.	डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (साधारण)	३१.००

महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि

१९७.	वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (प्रथम भाग)	१६०.००
१९८.	वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (द्वितीय भाग)	१६०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१९९.	महाभारत आर्य टीका (प्रथम भाग)	२००.००
२००.	महाभारत आर्य टीका (द्वितीय भाग)	२५०.००

Prof. Tulsi Ram

201.	The Book Of Prayer (Aryabhivinaya)	35.00
202.	Kashi Debate on Idol Worship	20.00
203.	A Critique of Swami Narayan Sect	20.00
204.	An Examination of Vallabha Sect	20.00
205.	Five Great Rituals of the Day (Panch Maha Yajna Vidhi)	20.00
206.	Bhramochhedan (New Edition)	25.00
207.	Bhranti Nivarana	35.00
208.	**Atmakatha**- Swami Dayanand Saraswati	20.00
209.	Bhramochhedan	5.00
210.	Chandapur Fair	5.00

DR. KHAZAN SINGH

211.	Gokaruna Nidhi	12.00

DEENBANDHU HARVILAS SARDA

212.	Life of Dayanand Saraswati	200.00

SWAMI SATYA PRAKASH SARASWATI

213.	Dayanand and His Mission	5.00
214.	Dayanand and interpretation of Vedas	5.00
२१५.	पवित्र धरोहर (सी.डी.)	५१.००

आचार्य उदयवीर शास्त्री

२१६.	जीवन के मोड़ (सजिल्द)	२५०.००

अन्य लेखकों के ग्रन्थ–निम्न पुस्तकों पर कमीशन देय नहीं है।

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	श्री गजानन्द आर्य	
२१७.	वेद सौरभ	१००.००
२१८.	Gokarunanidhi (Eng.)	२५.००
	डॉ. सुरेन्द्र कुमार (भाष्यकार एवं समीक्षक)	
२१९.	मनुस्मृति	३००.००
२२०.	महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति	१५०.००
	सत्यानन्द वेदवागीशः	
२२१.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (उत्तरखण्ड)	३००.००
२२२.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (पूर्वखण्ड)	३५०.००
	डॉ. वेदपाल सुनीथ	
२२३.	माध्यन्दिन शतपथीय यूप ब्राह्मणों का भाष्य (अजिल्द)	५०.००
२२४.	शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य(अजिल्द)	७०.००
२२५.	शतपथीययूप ब्राह्मण का भाष्य एवं शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य (सजिल्द)	१५०.००
२२६.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (विशिष्ट संस्करण)	५०.००
२२७.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (साधारण संस्करण)	२५.००
	आचार्य सत्यव्रत शास्त्री	
२२८.	उणादिकोष	८०.००
२२९.	दयानन्द लहरी	५०.००
	प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार	
२३०.	वेदाध्ययन (भाग–१)	६.००
२३१.	वेदाध्ययन (भाग–२)	७.००
२३२.	वेदाध्ययन (भाग–१०)	६.००
२३३.	प्रार्थना सुमन	४.००
२३४.	ईश्वर! मुझे सुखी कर	
२३५.	कौन तुझको भजते हैं?	८.००
२३६.	पावमानी वरदा वेदमाता	९.००
२३७.	प्रभात वन्दन	६.००
२३८.	भक्ति भरे भजन	११०.००
२३९.	विनय सुमन (भाग–३)	६.००
२४०.	वेद सुधा	८.००
२४१.	वेद पढ़ो और पढ़ाओ	१००.००
२४२.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–२)	६.००
२४३.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–३)	५.००
२४४.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–४)	९.००
२४५.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–५)	६.००
२४६.	Quest for the Infinite	20.00
२४७.	वैदिक आदर्श परिवार (बड़ा आकार)	१५०.००
	श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	
२४८.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–१)	
२४९.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–२)	१६०.००
२५०.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–३)	१७०.००
२५१.	अमर कथा पं. लेखराम	६०.००
२५२.	कवि मनीषी पं. चमूपति	१६०.००
२५३.	कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में	२००.००
२५४.	निष्कलंक दयानन्द	१६०.००
२५५.	मेहता जैमिनी	१५०.००
२५६.	कुरान वेद की छांव में	१५०.००
२५७.	जम्मू शास्त्रार्थ	३०.००
२५८.	महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव	२०.००
२५९.	श्री रामचन्द्र के उपदेश	२५.००
२६०.	धरती हो गई लहुलुहान	३०.००
	विविध ग्रन्थ	
२६१.	नित्यकर्म विधि तथा भजन कीर्तन	२०.००
२६२.	उपनिषद् दीपिका	७०.००
२६३.	आर्य समाज के दस नियम	१०.००
२६४.	मद्यनिषेध शिक्षित शतकम्	१५.००
२६५.	आर्यसमाज क्या है ?	८.००
२६६.	जीवन का उद्देश्य	२०.००

२६७.	वेदोपदेश	३०.००
२६८.	सत्यार्थ प्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन	२०.००
२६९.	भगवान् राम और राम–भक्त	२५.००
२७०.	जीवन निर्माण	२५.००
२७१.	१०० वर्ष जीने के साधन नित्यकर्म	२५.००
२७२.	दयानन्द शतक	८.००
२७३.	जागृति पुष्प	८.००
२७४.	त्यागवाद	२५.००
२७५.	भस्मान्तं शरीरम्	८.००
२७६.	जीवन मृत्यु का चिन्तन	२०.००
२७७.	ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप	१०.००
२७८.	कर्म करो महान बनो	१४.००
२७९.	अष्टाध्यायी सूत्रपाठ	५०.००
२८०.	आनन्द बहार शायरी	१५.००
२८१.	वैदिक वीर गर्जना	२५.००
२८२.	पर्यावरण विज्ञानम्	२०.००

DR. HARISH CHANDRA

283	The Human Nature & Human Food	12.00
284.	Vedas & Us	15.00
285.	What in the Law of Karma	150.00
286.	As Simple as it Get	80.00
287.	The Thought for Food	150.00
288.	Marriage Family & Love	15.00
289.	Enriching the Life	150.00

डॉ. वेदप्रकाश गुप्त

२९०.	दयानन्द दर्शन	६०.००
२९१.	Philoshophy of Dayanand	150.00
२९२.	महर्षि दयानन्द का समाज दर्शन	२०.००

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

२९३.	आर्य सिद्धान्त और सिख गुरु	६०.००
२९४.	आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण (आचार्य सत्यजित् जी)	४०.००

यू–ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू–ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये–नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने–देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा– वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये–नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

योगी लोग मधुर प्यारी वाणी से योग सीखने वालों को उपदेश करें और अपना सर्वस्व योग ही को जानें तथा अन्य मनुष्य वैसे योगी का सदा आश्रय किया करें।

–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.११

जिज्ञासा समाधान – ६६

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा– मान्यवर सादर नमस्ते।

मैं परोपकारी का नियमित पाठक हूँ, इसके सभी लेख विशिष्ट होते हैं। आपके द्वारा जिज्ञासा-समाधान लेख स्तुत्य है।

मान्यवर मेरी भी एक जिज्ञासा है, मैं वर्षों से सुनता आ रहा हूँ कि मुक्ति का मार्ग बड़ा कठिन है। इस मार्ग पर कोई विरला ही चल सकता है। ऐसा पढ़ा भी है। मेरी समझ में अब तक नहीं आया कि ये कठिनता क्या है, मुक्ति का मार्ग कठिन कैसे है। आधुनिक धर्म गुरु इसको बहुत सरल कहते हैं। मार्ग दर्शन की आशा में।

– अतुल सागर, मध्य प्रदेश

समाधान– प्राय: आध्यात्मिक व्याख्यानों में मोक्ष की चर्चा होती है, इस चर्चा में मोक्ष कौन प्राप्त कर सकता है, कैसे प्राप्त कर सकता है, इसके साधन क्या हैं, मार्ग कैसा हो, कौन-सा हो आदि बातें रखी जाती हैं। इन्हीं बातों के बीच मोक्ष मार्ग को बहुत कठिन भी बताया जाता है। आप इसी कठिनता को जानना चाहते हैं। इस विषय में हम कुछ विस्तार से लिखते हैं।

कोई मार्ग यदि सरल है तो यात्रा भी सरल हो जाती है और मार्ग ठीक नहीं है तो यात्रा भी कठिन हो जाती है। यात्रा केवल मार्ग सरल होने पर निर्भर नहीं करती, यात्रा तो यात्री पर भी निर्भर करती है। यदि यात्री कमजोर, रोगी, निरुत्साही और प्रमादी है तो वह ऋजु= सरल मार्ग पर भी यात्रा नहीं कर सकता और यदि यात्री बलवान्, स्वस्थ, उत्साही और उद्यमी है तो वह कठिन मार्ग से भी अपने गन्तव्य को प्राप्त कर लेगा।

आज बहुत से आधुनिक धर्मगुरु मतानुयायी जो कि मानसिक-शारीरिक बल से हीन, अस्वस्थ, निरुत्साही, प्रमादी यह दम्भ भरते हैं कि हम परमलक्ष्य तक पहुँच गये हैं, मुक्ति का मार्ग बड़ा सरल है। जो हमारा शिष्य बनेगा उसको भी हम मुक्ति तक पहुँचा देंगे। उनका यह कथन मिथ्या प्रलाप मात्र है। क्योंकि शास्त्र कहता है-

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो
न च प्रमादात्तपसो वाप्यलिंगात्।

-मुण्डकोपनिषद्-४/५७

यह आत्मा बलहीन अर्थात् शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक बल से हीन व्यक्ति को प्राप्त नहीं हो सकता, न प्रमादी को और न ही लक्ष्यहीन तप करने वाले को। जब हम इस शास्त्र वचन पर विचार करते हैं तो हमें लगता है कि इन मतानुयायी गुरुओं के पास वह वस्तु है ही नहीं कि जिसको परमलक्ष्य मोक्ष कहते हैं। वह तो वेदपथानुगामी ऋषियों के पास है। वैसे भी ऋषियों ने इस मार्ग को **'अणुः पन्था' 'क्षुरस्य धारा'** आदि विशेषणों से युक्त कहा है। अर्थात् मोक्ष मार्ग अत्यन्त सूक्ष्म है, छुरे की धार पर चलने के बराबर है।

वह इसलिए है कि इस मार्ग में अपने आपको प्रत्येक क्षण सांसारिक आकर्षणों से रोके रखना होता है। अपनी प्रत्येक इन्द्रिय और उसके विषय को समझना, मन और मन में पड़े संस्कारों को जानना, उनको तनु-कमजोर करना, दग्धबीज करना, बुद्धि को जानना कि यह क्या वस्तु है, मेरे लिए यह कल्याणकारी वा अकल्याणकारी कैसे सिद्ध हो सकती है, यह देखना विचारना बड़ा कठिन है। इसलिए मोक्ष मार्ग को कठिन कहा जाता है।

प्राय: व्यक्ति थोड़ी-बहुत सन्ध्योपासना करके, पूजा-पाठ अथवा मन्दिरों व तीर्थों का अटन करके, आजकल के नामधारी गुरुओं का शिष्य बनकर सोचते हैं कि हम मुक्ति के मार्ग पर हैं। यह सोचना उनका केवल भ्रममात्र है। क्योंकि शास्त्र इतने मात्र को मुक्ति का मार्ग नहीं कहता।

शास्त्र तो कहता है जिसका अन्त:करण शुद्ध है और जो अन्त:करण शुद्ध करने में लगा हुआ है, वह ही मोक्ष मार्ग का अधिकारी और मोक्षमार्ग का पथिक है। जब व्यक्ति अपनी शारीरिक क्रियाओं को देखता है अर्थात् वह देखता है कि मेरा उठना-बैठना, चलना, मेरा हंसना, मेरे मुखमण्डल के भाव ऋषियों के तुल्य हैं या नहीं। मैं शरीर से हिंसा, चोरी आदि कर्म तो नहीं कर देता। इस मार्ग का पथिक अपनी वाणी के व्यवहार को देखता है कि मैं कहाँ-कहाँ बिना प्रयोजन के बोलता हूँ, कहाँ मेरे से असत्य भाषण होता है, मुझसे असत्य भाषण क्यों होता है। कब मैं द्वेष से युक्त होकर वाणी से अप्रिय वचन बोलता हूँ। इसी प्रकार मन का विश्लेषण करता है कि मेरे मन में कब कैसे भाव उठते हैं, ये भाव उठते हैं या मैं उठा लेता हूँ। किसको देख-सुनकर मन के अन्दर कैसी प्रतिक्रिया होती है। इन

सबको मोक्षमार्गी बड़ी सूक्ष्मता से देखता है।

सब ऐषणाओं को छोड़कर इन सब शारीरिक, वाचनिक और मानसिक व्यवहारों को देखकर, जो इनमें से अधर्मपूर्वक व्यवहार है, उसको छोड़ता है और जो धर्मयुक्त व्यवहार है उसको करता है। ऐसा करने से व्यक्ति का अन्त:करण शुद्धता की ओर चल पड़ता है। सांसारिक इच्छाओं को न रखकर केवल ईश्वर इच्छा के अनुकूल चलना, परमेश्वर की इच्छा को पहचानना, ऋषियों के मन्तव्यों को ठीक-ठीक समझना। उन मन्तव्यों के अनुकूल अपने आपको चलाना, व्यवहार करना ये बड़ा कठिन कार्य है। इसलिए ऋषियों ने इस मार्ग को **'अणु: पन्था'' क्षुरस्य धारा'** कहा है। आप कठिनता को जानना चाहते हैं, तो आपको उपरोक्त बातों से इस मार्ग की कुछ कठिनता का ज्ञान हुआ होगा।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

पुस्तक-परिचय

१. **पुस्तक का नाम**- अमोघ धन की कुञ्जी
लेखक- ओममुनि वानप्रस्थी
सम्पादिका- आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा
प्रकाशक- ओममुनि वानप्रस्थी (ब्यावर, राजस्थान)
पृष्ठ- ४२ **मूल्य**- १५/-

मनुष्य को जीवन-यापन करने के लिए अनेक विध उद्योग करने पड़ते हैं। उद्योग करके मनुष्य अनेकों लाभ प्राप्त कर लेता है। उद्योग (पुरुषार्थ) से विद्या प्राप्ति, शरीर बलवान्, स्वस्थ बनाना, यश-कीर्ति को प्राप्त करना आदि मनुष्य करता है। सुखपूर्वक जीवन-यापन करने के लिए जैसे विद्या, स्वस्थ बलवान शरीर, विभिन्न साधनों की आवश्यकता है, वैसे ही धन की भी बहुत बड़ी आवश्यकता है। विद्या व स्वस्थ शरीर के होते हुए भी बिना धन के व्यक्ति का काम नहीं चल पाता अर्थात् सुख पूर्वक जीवन व्यतीत नहीं कर पाता।

धर्मपूर्वक धन-ऐश्वर्य प्राप्त करने के लिए वेदादि शास्त्रों में मनुष्य के लिए अनेकत्र उपदेश किया है कि 'हे मनुष्यो! तुम पुरुषार्थी होकर धर्मपूर्वक धनैश्वर्य को प्राप्त होके सुखी होवो।' इस प्रकार का उपदेश अर्थात् परमात्मा ऋषियों, नीतिकारों का उपदेश हम एक साथ प्राप्त कर सकें, ऐसी कुछ भावनाओं से युक्त होकर श्री ओममुनि (मन्त्री, परोपकारिणी सभा) ने वेद मन्त्रों व श्लोकों का संकलन **''अमोघ धन की कुञ्जी''** रूपी पुस्तक में किया है। इस पुस्तक का सम्पादन आर्यजगत् व अन्यत्र भी अपनी सद्विद्या व गुणों से प्रतिष्ठित विदुषी आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा ने किया है।

पुस्तक में धन के गुण व धन प्राप्ति के उपाय, धन प्राप्ति की ईश्वर से प्रार्थना, धन की तीन गतियाँ, धन संरक्षण के उपाय, धन का सदुपयोग, निर्धनता की निन्दा आदि २२ विषयों पर प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक विषय पठनीय है। धन विषयक वेद-मन्त्रों व श्लोकों से युक्त यह पुस्तक जन सामान्य व विद्वानों के लिए ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी ऐसी आशा है। सुन्दर आवरण से युक्त इस पुस्तक को पाठक प्राप्त कर अमोघ धन की कुञ्जी को प्राप्त करें।

- सोमदेव, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

२. **पुस्तक का नाम**- जाने आर्य समाज को
लेखक - रामनिवास 'गुण ग्राहक'
प्रकाशक- महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, महर्षि दयानन्द मार्ग, जोधपुर, राज.-३४२००१
मूल्य - १५=०० रु. **पृष्ठ संख्या** - ३०

इस देश को आर्यावर्त्त के नाम से जाना जाता था। भारत नाम बाद में आया। आर्यावर्त्त के निवासी आर्य थे। हमारी परम्परा में आर्य शब्द प्रचलित था। रामायण काल में राजा, पति, स्वामी को आर्य शब्द से ही सम्बोधित किया जाता था। अंग्रेजों की गुलामी ने आर्यों को बाहर से आना बताया। आज की शिक्षा पद्धति में यही पढ़ाया जाता है। लेखक ने सभी भारतवासियों को सजग करने के लिए 'जाने आर्य समाज को' पुनर्जन्म, कर्मफल सिद्धान्त, संस्कार, वर्णाश्रम व्यवस्था आदि पर प्रकाश डाला है। साथ में भ्रान्तियों का निवारण भी सटीक किया है। हर भारतीय नागरिक इसे भली-भांति समझ सकता है। आर्य समाज की ओर अग्रसर होने के लिए सरलतम मार्ग भी यही है। महिमा आर्यसमाज कविता रूप में सम्पूर्ण निष्कर्ष दिया है। मुखपृष्ठ आकर्षक है। पृष्ठ भाग में विचारकों के विचार हैं। विचारों के ओत-प्रोत हेतु पूर्ण सामग्री है। पृष्ठ १ पर नवीं पंक्ति में क अधिक छप गया है। पृष्ठ ३ पर १८५७ को संशोधित कर १८७५ किया गया है। पुस्तिका लघु है किन्तु सामग्री ग्राह्य है।

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

संस्था - समाचार

१ से १५ जून २०१४

१. यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है कि ऋषि उद्यान, आर्यजगत् के उन स्थलों में से है जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रातःकाल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। दोनों ही समय प्रवचन-स्वाध्याय आदि की व्यवस्था है। इन प्रवचनों-स्वाध्याय के क्रम में वेदमन्त्रों तथा ऋषिकृत ग्रन्थों पर क्रमशः विचार किया जाता है। यथा- ऋग्वेद के अग्नि, इन्द्र, मरुत्, वरुण, रुद्र, उषा, विष्णु, सोम, अश्विनौ, सविता, बृहस्पति आदि देवता विषयक सूक्तों पर, विश्वामित्र-नदी संवाद (३/३३), यम-यमी संवाद (१०/१०), पुरुरवा-उर्वशी संवाद (१०-९५), सरमा-पाणि संवाद (१०/१०८), अक्ष सूक्त (१०/३४), पुरुष सुक्त (१०/९०), हिरण्यगर्भ सूक्त (१०/१२१), वाक् सूक्त (१०/१२५), नासदीय सूक्त (१०/१२९), संगठन सूक्त (१०/१९१) इत्यादि सूक्तों पर, यजुर्वेद के ३१वें (पुरुषाध्याय), ३२वें अध्याय, ३४वें अध्याय (शिवसंकल्प), ४०वें अध्याय (ईशावस्यम्) आदि का, अथर्ववेद के मेधा सूक्त (१/१), राष्ट्रसभा सूक्त (३/४), शालानिर्माण सूक्त (३/१२), सांमनस्य सूक्त (३/३०) वर्षा सूक्त (४/१५), ब्रह्मचर्य सूक्त (११/५), उच्छिष्टब्रह्म सूक्त (११/७), भूमि सूक्त (१२/१) इत्यादि प्रसिद्ध सूक्तों/मन्त्रों पर क्रमशः विचार किया जाता है, इसके साथ योगदर्शन, सत्यार्थप्रकाशादि ग्रन्थों का स्वाध्याय भी निरन्तर चलता रहता है।

प्रातः प्रवचन के क्रम में **डॉ. धर्मवीर जी** ने शिवसंकल्प मन्त्रों की व्याख्या करते हुए बताया कि यहाँ मन को देव, यक्ष, धृति, चित्त आदि नामों से कहा गया जो तत्तत् प्रसंग में व्याख्येय महत्त्व रखता है। मन को लेकर हमारे ऋषियों-मनीषियों ने पर्याप्त चिन्तन किया। हम चीजों/घटनाओं के प्रति गलत दृष्टिकोण बनाकर अनावश्यक तनाव ले लेते हैं, जो हमारे मानसिक स्वास्थ्य के साथ-साथ हमारे शारीरिक स्वास्थ्य, हमारी आयु पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इस तनाव को कम करने हेतु ऋषियों ने कृपा कर प्रातः सायं सन्ध्या, पञ्च महायज्ञ, यम-नियम आदि को व्रत की तरह हमारी दिनचर्या से जोड़ दिया, जिससे हमारा स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित हो सके तथा हमारा तनाव स्वतः ही कम हो जाए और जिससे हम मानसिक, शारीरिक आरोग्य प्राप्त करें। अपनी बात को पुष्ट करते हुए आपने मनु का उद्धरण देते हुए बताया कि ऋषियों ने देर तक सन्ध्या करने के कारण लम्बी आयु, प्रजा, बुद्धि, यश और ब्रह्मतेज को प्राप्त किया-

ऋषयो दीर्घसन्ध्यत्वाद्दीर्घमायुरवाप्नुयुः।
प्रजां यशश्च कीर्तिं च ब्रह्मवर्चसमेव च।।

- मनु. ४/९४

अपने योगदर्शन की व्याख्या के क्रम में **स्वामी विष्वङ् जी** ने विकल्प, निद्रा और स्मृति वृत्ति की सरल शब्दों में अनेक दृष्टान्तों के माध्यम से व्याख्या की। पुनः वृत्ति निरोध के उपायों में अभ्यास व वैराग्य की चर्चा करते हुए आपने बताया कि दीर्घकाल पर्यन्त, निरन्तर, तप-ब्रह्मचर्य-विद्या-श्रद्धा पूर्वक सेवित अभ्यास ही सुदृढ़ होता है और चञ्चल वृत्ति प्रवाहों के संस्कारों से शीघ्र दबने वाला नहीं होता। (धर्मप्रेमी जन इन पूरे-पूरे प्रवचनों को 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७-८ बजे के मध्य देख सकते हैं।)

सायंकालीन प्रवचन के क्रम में माननीय **सत्येन्द्र जी** (मेरठ) ने मनुर्भव, विद्या-अविद्या, धन का अभिमान, दान, मनुष्य-योनि की श्रेष्ठता आदि विषयों पर रोचक दृष्टान्तों के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किए। इन्हीं दृष्टान्तों में से एक आर्य भामाशाह नानजी भाई मेहता की चर्चा करते हुए आपने बताया कि मेहता जी ने अपने सात्विक दान से १९६५ ई. तक पोरबन्दर (गुज.) में एक कन्या गुरुकुल स्थापित कर दिया था तथा गुरुकुल की निधि में इतनी राशि भी जमा करा दी थी कि मूल राशि के ब्याज मात्र से ही कन्याओं के शिक्षा में आने वाले समस्त व्यय का वहन हो जाता था, छात्राओं से या अन्य दानदाताओं से दान लेने की आवश्यकता नहीं होती थी। मेहता जी ने पानी के जहाज में सफाई कर्मी के रूप में शून्य से अपनी यात्रा प्रारम्भ करके यहाँ तक पहुँचे थे। जब मेहता जी से अपने जीवन में इतने अधिक अर्थ सम्पन्न होने का कारण पूछा गया तो आपने बताया कि ईमानदारी, निष्ठा आदि के साथ-साथ दान देना (आप अपनी आय का आधा हिस्सा आर्यसमाज के लिए दान दे देते थे।) आपकी सफलता का कारण रहे।

२. आर्य-वीरांगना शिविर- जैसा कि विदित है कि महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा, सभ्य एवं सांस्कृतिक समाज के निर्माण के लिए नवयुवकों-नवयुवतियों के चरित्र-निर्माण हेतु कृतसंकल्प है। इसके लिए ऋषि उद्यान में मार्गदर्शक सदैव समुपस्थित हैं तथा अपने प्रचार कार्यक्रम को गति दे रहे हैं। इस योजना के अन्तर्गत सभा के प्रचारक जहाँ देश के विभिन्न प्रान्तों में जाकर चरित्र-निर्माण शिविर का आयोजन करते-करवाते हैं, वहीं प्रत्येक वर्ष ग्रीष्मावकाश में ऋषि उद्यान परिसर में युवक-युवतियों के लिए पृथक्-पृथक् आवासीय चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया जाता है।

इसी क्रम में ऋषि उद्यान में विगत १ से ८ जून २०१४ को छात्राओं के लिए चरित्र-निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। (छात्रों के लिए आयोजित शिविर १६ से २३ मई २०१४ को सफलतापूर्वक सम्पन्न हो चुका है।) शिविर में राजस्थान व अन्य ५ प्रान्तों से पधारीं लगभग १४० वीरांगनाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस दौरान जहाँ आत्मरक्षा हेतु जूडो-कराटे, आसन-प्राणायाम, सूर्यनमस्कार, लाठी, भाला, तलवार, निशानेबाजी आदि का प्रशिक्षण दिया गया, वही आत्मिक व बौद्धिक विकास हेतु ध्यान, यज्ञ, वैदिक सिद्धान्तों का व्यवहारिक ज्ञान भी योग्य उपदेशकों-शिक्षकों के माध्यम से प्रदान किया गया। शिविर में बौद्धिक मार्गदर्शन हेतु डॉ. धर्मवीर, स्वामी विष्वङ्, डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा, रमेश मुनि, मुमुक्षु मुनि, बलेश्वर मुनि, डॉ. सरोज क्षेत्रपाल, डॉ. प्रशान्त शर्मा, डॉ. मृत्युञ्जय शर्मा, डॉ. अर्चना तेला, पं. भूपेन्द्र, श्री यतीन्द्र आर्य की सम्माननीय उपस्थिति रही। वहीं शारीरिक प्रशिक्षण-अनुशासन आदि के लिए श्री यतीन्द्र आर्य, सुश्री श्वेता आर्या, अदिति आर्या, स्वस्ति आर्या, वन्दना चौधरी, ममता चौहान, शशी अग्रवाल, प्रियंका आर्या, कुमुदनी आर्या, माता अरुणा पारीक आदि का मार्गदर्शन प्राप्त हो सका।

शिविर के अन्तिम दिन नशा मुक्ति रैली का भी आयोजन किया गया। इस शिविर में छात्राओं को बौद्धिक-शारीरिक प्रशिक्षण के साथ-साथ संगीत, चित्रकला, भाषण, हस्तलेखन आदि का भी प्रशिक्षण प्रदान किया गया तथा उस-उस विषय की परीक्षा भी ली गई। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली छात्राओं को समापन समारोह में गणमान्य नागरिकों की समुपस्थिति में पुरस्कृत किया गया। समापन समारोह में इन आर्य वीरांगनाओं द्वारा प्रस्तुत विभिन्न प्रदर्शनों ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लिया।

३. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम- (क) ३०-३१ मई २०१४- आर्यसमाज सरसावा, सहारनपुर, उ.प्र. के वार्षिकोत्सव में भाग लिया।

(ख) ८ जून २०१४- जयपुर में श्री आशीष कुमार सुपुत्र श्री तपेन्द्र कुमार (वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, राजस्थान सरकार) का विवाह सम्पन्न करवाया।

(ग) १३ से १५ जून २०१४- आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज, सिरोही (राज.) के वार्षिकोत्सव में मार्गदर्शक के रूप में आमन्त्रित रहे।

आगामी कार्यक्रम- **(क) ३ से ९ जुलाई**- बीकानेर में वेदकथा के माध्यम से व्याख्यान प्रदान करेंगे।

४. आचार्य सत्येन्द्र जी का प्रचार कार्यक्रम- (क) ओडिशा प्रचार यात्रा- वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार का दृढ़ संकल्प लेकर **आचार्य सत्येन्द्र जी व ब्र. वामदेव जी** १ मई से २ जून २०१४ तक एक मास के लिए ओडिशा प्रान्त में निरन्तर एक स्थान से दूसरे स्थान, एक गाँव से दूसरे गाँव, एक गुरुकुल से दूसरे गुरुकुल तक बिना रुके, बिना थके, अविराम भ्रमण करते रहे। इस बार प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत पश्चिमी ओडिशा में गुरुकुल हरिपुर, गुरुकुल नवप्रभात आश्रम, गुरुकुल आमसेना, गुरुकुल नृसिंहनाथ, स्वामी देवव्रत जी द्वारा संचालित वैदिक आश्रम इत्यादि आर्यसंस्थाओं का भ्रमण किया। इन स्थानों पर जाकर देश-काल-परिस्थिति के अनुसार विभिन्न विषयों पर व्याख्यान हुए। ब्र. वामदेव जी के साथ आचार्य जी ने इस इलाके के गाँवों में अनेकों परिवारों में यज्ञादि कराकर अनेक लोगों को मांसाहार, गुटका आदि छुड़ाने का संकल्प कराया। संकल्प के अनुसार संकल्पित लोगों ने उसी समय मांस-अण्डा आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा की। जिन घरों में किसी कारण से यज्ञ नहीं हो पाया उन घरों में केवल पानी का छींटा देकर परिवार के सदस्यों से उपरोक्त अभक्ष्य पदार्थों को त्यागने की प्रतिज्ञा दिलाई, जिससे कई परिवारों ने तत्क्षण इन पदार्थों को छोड़ने का मन भी मना लिया।

ओडिशा निवासी प्रायः शान्त, धार्मिक और सौम्य प्रकृति के हैं, उनसे आचार्य जी को अत्यन्त स्नेह और अपनत्व प्राप्त हुआ, अत. ओडिशा वासी लोगों को बहुत-बहुत आभार।

(ख) सामवेद परायण यज्ञ- आदर्श नगर, अजमेर निवासी श्री अनीश जी (राजपूताना म्यूजिक हाउस) की पुत्री भूमिका के द्वितीय जन्मदिवस के अवसर पर ६ से ८

जून २०१४ को सामवेद पारायण यज्ञ **आचार्य सत्येन्द्र जी** के ब्रह्मत्व में निर्विघ्नता से सम्पन्न हुआ। वेदपाटी के रूप में **ब्र. अमित व ब्र. शोभित जी** समुपस्थित थे। इस अवसर पर प्रथम दिन ६ जून को परोपकारिणी सभा के कार्यकारी प्रधान **डॉ. धर्मवीर जी** के उद्‌बोधन का लाभ भी यज्ञप्रेमी जनों को प्राप्त हुआ। श्री प्रधान जी ने स्वास्थ्य-आरोग्यता विषय पर सरल शब्दों में गम्भीर विचार प्रस्तुत किए। आपने बताया कि आजकल हम आधुनिकता के नाम पर भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार किए बिना कुछ भी खा-पी रहे हैं। परिणामस्वरूप बीमार पड़ने पर दवाईयाँ खानी पड़ती है। लेकिन व्यक्ति यह विचार नहीं करता कि मैं बीमार क्यों पड़ा? अगर व्यक्ति इस तरह विचार करने लगे तो कभी बीमार ही न पड़े। आपने दृष्टान्त के माध्यम से बताया कि जैसे हम कचरे के पात्र में अनुपयोगी समझा जाने वाला कचरा डालते हैं वैसे ही आज हमने अपने उदर को भी कचरे का पात्र बना लिया है। जिसमें आधुनिकता के नाम पर अनावश्यक पदार्थ डालते रहते हैं। मनुष्य को सुन्दर स्वास्थ्य की परिभाषा केवल ऋषियों के ग्रन्थों को पढ़ने से ही समझ में आ सकती है।

५. आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम- सर्वोदय संन्यासी स्वामी आत्मानन्द जी की प्रेरणा व जनसमूह के अथक प्रयास से सर्वहिताय सर्वोदय उच्च प्राथमिक वेद शिक्षा मन्दिर (गुरुकुल) मलारना चौड़ (राजस्थान) में दिनांक २ से ६ जून २०१४ तक का विशाल यजुर्वेद पारायण महायज्ञ व प्रवचन का कार्यक्रम आदरणीय आचार्य श्री सोमदेव जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। वेदपाठी ब्र. अमित व विवेक के सुमधुर वेदमन्त्रों एवं भानुप्रकाश जी के भजनों के साथ यह कार्यक्रम ईश्वरकृपा से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

यज्ञोपरान्त आध्यात्मिक प्रवचन व उपदेशों की लोगों ने जमकर सराहना व प्रशंसा की। यज्ञ के सम्बन्ध में आपने बताया कि यज्ञ कब मर जाता है? तो कहा-

मृतो दरिद्रोपुरुषो, मृतं राष्ट्रमराजकम्।
मृतमश्रोत्रियं दानं, मृतो यज्ञस्त्वदक्षिणः।।

अर्थात् जिस यज्ञ में दक्षिणा नहीं दी जाती, वह यज्ञ मर जाता है। आपने इस विशाल यज्ञ में प्रत्येक नर-नारी से दक्षिणा ली। आजकल के बाबाओं, गुरुडम फैला रहे गुरुओं, लोभी सन्तों जैसी धन की दक्षिणा नहीं ली, बल्कि दुर्व्यसन छोड़ने गायत्री मन्त्र का जप व यज्ञ करने की दक्षिणा एक भिक्षुक के रूप में ली और लोगों ने दोनों हाथों को उठाकर इस दक्षिणा को आपकी झोली में सहर्ष प्रदान किया।

६. आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- चतुर्वेद शतकम् यज्ञ- महर्षि दयानन्द विद्यापीठ साधक आश्रम, ग्राम-जमानी, इटारसी (म.प्र.) में **स्वामी अमृतानन्द जी** के संयोजन में तथा **आचार्य कर्मवीर जी** के ब्रह्मत्व में ६ से ८ जून को 'चतुर्वेद शतकम् यज्ञ' निर्विघ्नता से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में श्री वेदप्रकाश शर्मा (पुलिस महानिरीक्षक, शहडोल, म.प्र.), आचार्य सत्यप्रिय जी (ऋषि उद्यान, अजमेर), ग्राम जमानी के सरपंच श्री हेमन्त जी आदि पधारे। कार्यक्रम में स्थानीय लोगों के अतिरिक्त ओडिशा से पधारे वानप्रस्थियों-संन्यासियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रतिदिन प्रातः ६ से ७ बजे तक स्वामी अमृतानन्द जी द्वारा योग-ध्यान का अभ्यास भी करवाया गया। इसी प्रकार मध्याह्न ३ से ४ बजे, स्वामी जी द्वारा ही जिज्ञासुओं की योग विषयक शंकाओं का समाधान किया गया।

७. आचार्य सत्यप्रिय जी का प्रचार कार्यक्रम-
(क) ४-७ मई २०१४- ऋषि उद्यान, अजमेर के उपाचार्य सत्येन्द्र जी के जिला छिन्दवाड़ा के अनेकों ग्रामों में नगर आर्यसमाज तथा गुरुकुल सोनाखार आदि में यज्ञ एवं प्रवचन के कार्यक्रम का संयोजन किया।

(ख) १३-२० मई २०१४- महर्षि दयानन्द सरस्वती वैदिक विचार चैरिटेबल ट्रस्ट, परतवाड़ा (अमरावती, महाराष्ट्र) द्वारा आयोजित छात्रों के चरित्र-निर्माण शिविर में मार्गदर्शन प्रदान किया। इसके अन्तर्गत लगभग ५० छात्रों को वैदिक सिद्धान्तों के परिचय के साथ आसन, प्राणायाम, जूडो-कराटे, लाठी, यज्ञ आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

(ग) १ जून २०१४- अमरघाट आश्रम (छिन्दवाड़ा, म.प्र.) में लगभग २५०-३०० लोगों की उपस्थिति में यज्ञ सम्पन्न करवाया तथा लोगों को उद्‌बोधन प्रदान किया।

(घ) २ जून २०१४- जिला सिवनी (म.प्र.) में पारिवारिक यज्ञ-सत्संग।

(ङ) ३ जून २०१४- दमुआ, जि. छिन्दवाड़ा (म.प्र.) में प्रचार-प्रसार।

(च) ४-५ जून २०१४- सारणी जिला बैतूल (म.प्र.) में सामूहिक यज्ञ-प्रवचन का कार्यक्रम।

(छ) ६-८ जून २०१४- जमानी, जिला इटारसी (म.प्र.) में 'चतुर्वेद शतकम् यज्ञ' में भाग लिया। इति।।

- दीपक आर्य

आर्यजगत् के समाचार

१. केरल प्रचार यात्रा- मैं (बालेश्वर मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर) पिछले दिनों २५ अप्रैल से २ जून २०१४ के मध्य पुनः केरल प्रान्त में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ गया। यह कार्यक्रम श्री एम.आर. राजेश जी के संयोजन से मूर्त्त रूप में आ सका। श्री राजेश जी 'कशप वेद अनुसन्धान संस्थान' (के.वी.आर.एफ.) के संस्थापक हैं, आपकी यह संस्था, केरल जैसे प्रान्त में बड़े ही उत्साह से वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य कर रही है।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत केरल के भिन्न-भिन्न नगरों यथा- कालीकट, मुकम, कन्नूर, वनयाड़ आदि के अनेकों संस्थानों/परिवारों में जाकर आर्यसमाज के सिद्धान्तों व मान्यताओं की चर्चा की। इस दौरान वयोवृद्ध आर्य विद्वान् श्री वेलायुधा जी आदि से मिलने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस प्रकार श्री राजेश जी के संयोजन से तथा उनके कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से यह यात्रा आशानुरूप सफल रही।

२. वैदिक वीरांगना दल, जयपुर के कार्यक्रम- वैदिक वीरांगना दल के द्वारा गुरुवार २९ मई, २०१४ को दोपहर ३ बजे से शाम ५ बजे तक 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के लक्ष्य को रखते हुए एक महिला धर्म सभा व भजन प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया जिसमें शहर के सभी वर्ग की महिलाओं तथा आर्यसमाजों की बहनों जिनमें सरोज कालरा, डॉ. सुमित्रा आर्या, सरोज अग्रवाल, निर्मला, वेद साहनी, उषा चांदना, ब्रह्मा मित्तल, कमलेश कुच्छल, शकुन्तला छत्रपाल , पुष्पा नारंग, शशि दीवान आदि महिलाओं ने भाग लिया। यह कार्यक्रम संस्था के कार्यालय बी-१२३, मालवीय नगर, जयपुर में रखा गया तथा कार्यक्रम का संचालन श्रीमती दुर्गा शर्मा द्वारा किया गया। संस्था की अध्यक्षा कुमारी अनामिका शर्मा ने बताया कि वैदिक धर्म के प्रचार के लिए गठित यह संस्था आगे भी अनेक कार्यक्रम करती रहेगी। इस कार्यक्रम में लगभग १०० महिलाओं ने भाग लिया और वैदिक धर्म के भजन व चिन्तन के साथ शान्ति पाठ किया गया।

३. शिविर सम्पन्न- आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्त्वाधान में आर्य वीर दल मुम्बई ने आदर्श जीवन निर्माण शिविर का आयोजन दिनांक ११ से १८ मई २०१४ तक आर्य समाज सान्ताक्रुज में किया। यज्ञ के उपरान्त शिविर का उद्घाटन एवं ध्वजारोहण प्रसिद्ध उद्योगपति एवं आर्यश्रेष्ठी श्री लद्धाभाई विश्राम पटेल, घाटकोपर के करकमलों से हुआ। इस शिविर के मुख्य शिक्षक श्री धर्मेन्द्र आर्य मुम्बई, श्री प्रशान्त आर्य अलीगढ़ एवं श्री हरेन्द्र आर्य मुजफ्फरनगर थे। मुम्बई के सभी आर्य समाजों के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लेते हुए बच्चों का उत्साहवर्धन किया। आदर्श जीवन निर्माण शिविर के अन्तर्गत शारीरिक, आत्मिक व बौद्धिक उन्नति के लिए अनेक विद्वानों को आमन्त्रित करके विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन दिया गया।

४. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज भीमगंज मण्डी का वार्षिकोत्सव ३ जून २०१४ को बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में डॉ. शिवदत्त पाण्डे (सुल्तानपुर, उ.प्र.), पं. बिरधीचन्द शास्त्री (हाड़ौती), पं. रामदेव शर्मा (कोटा), आचार्य राजेन्द्र (सुल्तानपुर, उ.प्र.) आदि विद्वान् महानुभावों ने अपना मार्गदर्शन प्रदान किया। मुजफ्फरनगर से पधारे भजनोपदेशक नरेश निर्मल ने अपने सुमधुर कण्ठ से ईश्वर स्तुति के साथ-साथ सामाजिक चेतना के भजन सुनाये।

५. शिविर सम्पन्न- आर्यसमाज विज्ञान नगर, कोटा, राजस्थान परिसर में आयोजित साधना एवं ध्यान योग शिविर के क्रियात्मक प्रशिक्षण के अवसर साधना एवं सन्ध्या का महत्व बताया गया। ध्यान से मन अन्तर्मुखी होता है। विभिन्न ध्यान मुद्राओं के माध्यम से मन को अन्तर्मुखी बनाने की विधियाँ बताई गई। इस शिविर में योग प्रशिक्षक श्री अरविन्द पाण्डेय एवं प्रदीप शर्मा ने श्रोताओं को समझाया। मन्त्री राकेश चड्ढा ने बताया शिविर में महिला एवं पुरुष साधकों के साथ बाल साधकों ने भी भाग लिया।

६. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज डोहरिया, भीलवाड़ा, राजस्थान का वार्षिकोत्सव २० से २६ मई २०१४ तक मनाया गया। दिनांक २२ मई को ग्राम तसवारियो बाँसा में सत्यार्थप्रकाश की पुस्तकें वितरित की गई। २३ मई को प्रतिमा पूजन का खण्डन सम्बन्धित पुस्तकें वितरित की गई। २५ मई को ग्राम राजपुरा में वेद प्रचार का कार्यक्रम रखा गया। २६ मई को ग्राम मोतीपुरा में यज्ञ के बाद उपदेश हुये।

७. शिविर सम्पन्न- आर्यवीर दल, सोनीपत तथा जिला वेदप्रचार मण्डल, सोनीपत की ओर से वैदिक ज्ञान योग महाविद्यालय (गुरुकुल) ग्राम जुआ (सोनीपत) में उदीयमान युवाओं के लिये ३ से ८ जून तक चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

गुरुकुल के आचार्य वेदनिष्ठ जी की व्यवस्था में इस शिविर में कक्षा ६ से १२वीं तक आयु वर्ग के ३५ विद्यार्थियों को हरिद्वार से स्वामी केवलानन्द जी द्वारा योग प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

८. स्थापना दिवस मनाया- महर्षि दयानन्द चौक नारनौल, हरियाणा में आर्यसमाज का १३९वाँ स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें महेन्द्रगढ़ जनपद के सैकड़ों नर-नारी सम्मिलित हुए। स्वामी ब्रह्मानन्द को सम्मेलन का अध्यक्ष बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। राजेन्द्र आर्य मड़लाना सपत्नीक यजमान बने। पुरोहित पं. रमेश शास्त्री ने विधि-विधान से मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञ कराया। अध्वर्यु लक्ष्मीनारायण आर्य बने।

९. प्रवेश सूचना- गार्गी कन्या गुरुकुल भैयाँ, चामड़, अलीगढ़, उ.प्र. में कक्षा छठी से प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। निरन्तर अध्ययन-अध्यापन के साथ आदर्श गुरुकुलीय दिनचर्या, अनुशासन, सौम्य एवं शान्त वातावरण, शुद्ध आहार, ऋषिकृत ग्रन्थों का परीक्षापूर्वक अध्ययन, सामान्य ज्ञान की प्रतियोगिता, शुद्ध मन्त्रोच्चारण, स्वास्थ्य व शुद्धता का नियमित निरीक्षण इस गुरुकुल की विशेषताएँ हैं। इसके अतिरिक्त गुरुकुल द्वारा स्वयं की गौशाला भी संचालित है। आपकी सन्तान को वैदिक शिक्षा पद्धति से ओत-प्रोत कर सर्वथा सुयोग्य बनाना ही हमारा लक्ष्य है। इच्छुक अभिभावक गुरुकुल के संचालक स्वामी चेतनदेव वैश्वानर जी से **सम्पर्क करें- ०९४१०४२६१९९, ०९४११८७९५६१**

१०. प्रवेश-सूचना- हिमालय की मनोहर उपत्यकाओं में स्थित गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, प्राच्य एवं आधुनिक विद्याओं का प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय है। स्नातक स्तर पर वेदालंकार एवं विद्यालंकार (बी.ए. समकक्ष) तथा एम.ए. में वेद, संस्कृत, दर्शन तथा प्राचीन भारतीय इतिहास आदि विषयों में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र उपलब्ध हैं। वेद, संस्कृत तथा दर्शन विषय के छात्रों के लिये निःशुल्क छात्रावास तथा वेदालंकार एवं वेद विषय में एम.ए. के योग्य छात्रों के लिये छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। विस्तृत विवरण विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.gkv.ac.in पर देखा जा सकता है।

११. प्रवेश प्रारम्भ- दिल्ली प्रदेश की प्रसिद्ध संस्था गुरुकुल खेड़ा-खुर्द दिल्ली-८२ में कक्षा ५वीं, ६ठी, ७वीं और ८वीं में प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। इच्छुक अभिभावक सम्पर्क करें।

६ठी से लेकर १२ तक अंग्रेजी, विज्ञान एवं संस्कृत व्याकरण पढ़ाने वाले अध्यापकों की आवश्यकता है। **सम्पर्क करें- ०९३५०५३८९५२, ०८८००४४३८२६**

१२. मांस बाजार बन्द करवाया- आर्यसमाज गंगापुरसिटी, राजस्थान ने कैलाश टॉकिज से तहसील तक मुख्य मार्ग में अवैध मांस की दुकानों को लम्बी कानूनी लड़ाई के बाद आखिरकार बन्द करवाया। आर्य नेता एवं सार्वदेशिक आर्य वीर दल के राष्ट्रीय संरक्षक मदनमोहन आर्य ने अपने दम पर कानूनी लड़ाई लड़ी। सबसे पहले मामला २००४ में एस.डी.ओ. ने आर्य के पक्ष में सुनाया, उसके बाद मांस व्यापारी २००८ में सैशन कोर्ट में भी हारे तथा वे बाद में हाईकोर्ट गए वहाँ से भी ३१/३/२०१४ में भी हाईकोर्ट ने मांस की दुकानों को हटाने का आदेश दिया। अन्ततः प्रशासन पर अदालत का दबाव देकर मांस की दुकानों को हटाया गया।

वैवाहिक

१३. वधु चाहिए- हैदराबाद के हैटेक सिटी में कार्यरत ३३ वर्षीय अपंग सॉफ्टवेयर इंजिनियर को, २६ से २८ वर्षीय, १२वीं या स्नातक तक शिक्षित, वैदिक संस्कृति-संस्कार युक्त एवं शुद्ध शाकाहारी वधु चाहिए। जात-पात का कोई बन्धन नहीं। **सम्पर्क- ०८१४२७७२३९२, ०९८८५६६७६८२**

चुनाव

१४. आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर नगर के चुनाव में **प्रधान**- श्री श्याम प्रकाश शास्त्री, **मन्त्री**- श्री विनोद कुमार आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री राधेश्याम आर्य को चुना गया।

१५. आर्यसमाज सिविल लाइन्स, रामघाट मार्ग, अलीगढ़, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- श्री रामदीन आर्य पुरुषार्थी, **मन्त्री**- श्री डॉ. पपेन्द्र आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री मोहन कुमार आर्य को चुना गया।

१६. आर्यसमाज मन्दिर मुरैना, म.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- श्री डॉ. ज्ञानशंकर शर्मा, **मन्त्री**- श्री विजयेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, **कोषाध्यक्ष**- श्री घनश्याम सिंह आर्य को चुना गया।

१७. आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर, तलवंडी सेक्टर-२, कोटा, राजस्थान के चुनाव में **प्रधान**- श्री रघुराज सिंह कर्णावत, **मन्त्री**- श्री भैरुलाल शर्मा, **कोषाध्यक्ष**- श्री शिवदयाल गुप्ता को चुना गया।

१८. आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, ११५,

पिछोली, उदयपुर, राजस्थान के चुनाव में **प्रधान**- श्री सुरेशचन्द्र चौहान, **मन्त्री**- श्री कैलाश मौर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री यशवन्त श्रीमाली को चुना गया।

१९. अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा, आर्यसमाज, आर्यनगर, पहाड़गंज, नई दिल्ली के चुनाव में **प्रधान**- श्री रवि गुप्ता, **मन्त्री**- श्री जनमेजय राणा, **कोषाध्यक्ष**- श्री ओमप्रकाश को चुना गया।

२०. आर्यसमाज नई मण्डी, महर्षि दयानन्द मार्ग, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- श्री आनन्दपाल सिंह आर्य, **मन्त्री**- श्री आर.पी. शर्मा, **कोषाध्यक्ष**- श्री गुलबीरसिंह आर्य को चुना गया।

२१. आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के चुनाव में **प्रधान**- श्री अशोक सहगल, **मन्त्री**- श्री सतीशचन्द्र मेहता, **कोषाध्यक्ष**- श्री सतीश कुमार को चुना गया।

२२. आर्य समाज मगरा पूंजला, जोधपुर, राज. के चुनाव में **प्रधान**- श्री प्रेमसिंह साँखला, **मन्त्री**- श्री जयसिंह भाटी, **कोषाध्यक्ष**- श्री ब्रह्मसिंह परिहार को चुना गया।

२३. आर्य समाज मन्दिर, सुभाषगंज, रुड़की के चुनाव में **प्रधान**- श्री डॉ. सुरेन्द्र कुमार सैनी, **मन्त्री**- श्री सत्यपाल सिंह, **कोषाध्यक्ष**- श्री हरफूलसिंह राठी को चुना गया।

२४. आर्य समाज हरिनगर, नई दिल्ली-६४ के चुनाव में **प्रधाना**- श्रीमती राजेश्वरी आर्या, **मन्त्री**- श्री श्रीपाल आर्य, **कोषाध्यक्ष**- डॉ. हृदेश सैलानी को चुना गया।

शोक समाचार

२५. स्वामी ऋत्मानन्द गुरुकुल विज्ञान आश्रम ट्रस्टी एवं आर्यसमाज के मन्त्री श्री विजयराज आर्य की माता जी स्वर्गीय श्रीमती तुलसीबाई का दिनांक १२/३/२०१४ को निधन हो गया। दिनांक १३/३/२०१४ को वैदिक रीति से आचार्य अभय जी ने अन्त्येष्टि करवाई व दिनांक २२/३/२०१४ को शान्तियज्ञ श्री पं. नौबतराम वानप्रस्थी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

२६. स्वामी ऋत्मानन्द गुरुकुल विज्ञान आश्रम के कोषाध्यक्ष श्री शिवराम प्रजापत के ज्येष्ठ पुत्र श्री चन्द्रशेखर आर्य ४२ वर्ष की अल्प आयु में उच्च रक्तचाप होने से दिनांक २६/३/२०१४ को निधन हो गया। पं. नौबतराम वानप्रस्थी व आचार्य अभय जी के द्वारा अन्त्येष्टि वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ व शान्तियज्ञ का कार्य भी सम्पन्न करवाया।

२७. श्री वेदप्रकाश आर्य सुपुत्र स्व. श्री जगदीशचन्द्र आर्य (कोसाना वाले) निवासी जोधपुर का निधन दि. २० मई २०१४ को हो गया। वेदप्रकाश जी भारतीय जीवन बीमा निगम में विकास अधिकारी के पद पर सेवारत थे। आपका पूरा परिवार वैदिक संस्कारों से संस्कारित एवं मिलनसार है। आप आयुर्वेद व होम्योपैथी के अच्छे जानकार थे। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

आर्यवीरांगना दल शिविर (१ से ८ जून २०१४)

ऋषि उद्यान, अजमेर

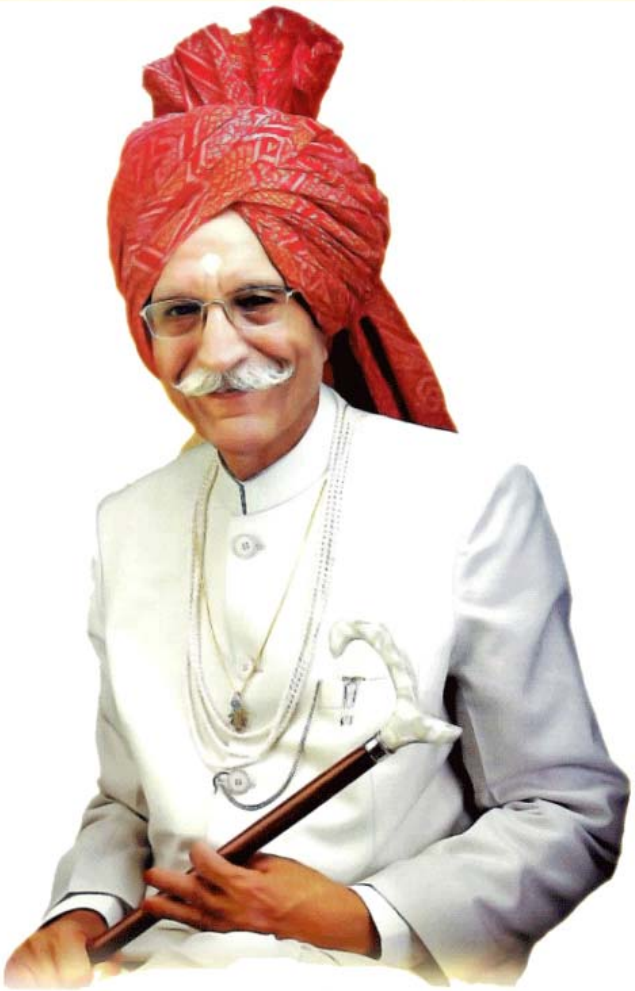

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : ३० जून, २०१४ ३९५९/५९

आर्य समाज के भामाशाह श्री महाशय धर्मपाल जी आर्य ने परोपकारिणी सभा, अजमेर को ग्यारह लाख रुपये का सात्विक दान प्रदान किया।

(सम्बन्धित विवरण पृष्ठ १९ पर)

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकिट

Design@ MITTAL 9829797513